

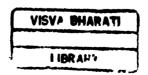


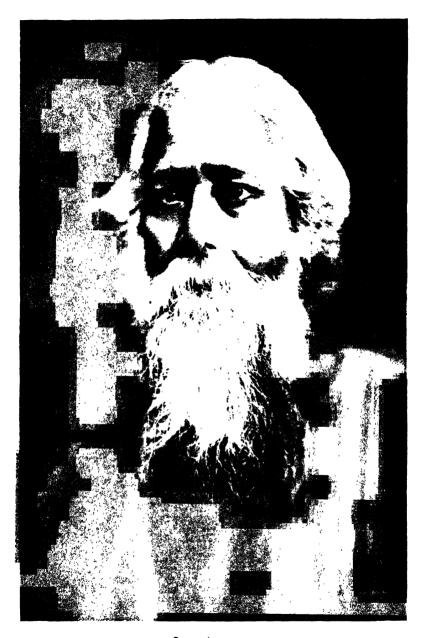
VISVA-BHARATI LIBRARY



PRESENTED BY

<u>у.В.</u>	Publi	shing.	.dept





রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। ১৯২৬ শান্তিনিকেতন আশ্রমিক সংঘের সৌজতে

Samon Samon

2015 JUN 2015 JUNG

VI RHARATI 212864 IIBRAHI

क्षित्र क्षित क्षित्र क्षित्य क्षित्र क्षित्र क्षिते क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र क्षित्र

हुस जूपका पा ॥ जुरुस जूपका मिट्ट मांट स्प्रिंग एर हड़े क्रियुम्पाट स्प्रिंग क्रिक्ट क्रास्ट आखे हुए हिल्स म्पाट प्रायम इंग्डिंग हुए क्रास्ट प्रमुखर नहीर अस्ति प्राप्त करत हम्होली प्राप्त करत हम्मी स्मार्थित हम्मी अंदे प्राप्त भारत स्मार्थित स्थान करता स्मार्थित स्थान करता स्मार्थित स्थान स्थान

र्षेड् क्रास्ट्र ॥ प्राप्त क्राप्त क्राप्त प्राप्त क्राप्त क् प्रक्रम अक्रम अस्ति क्ष्य क्ष्य है। अस्ति क्ष्य अस्ति क्ष्य क्ष्य

भिष्य स्ट्रीस्टिंस्य अभिद्ध स्ट्रीस्ट्री। स्ट्रिंस्य, हृष्ट्रिय न्स्स्र, पंत्र अस्ति इस्स् भिष्य अस्ति इस्स् भिष्य स्ट्रीस्ट्री श्रिंश स्ट्रीस्ट्री स्ट्रीस्ट्रीस्य श्रिंश स्ट्रीस्ट्रीस्य अभार भीर मामर शिवासी अभार भीर मामर शिवासी अभार भीर मामर शिवासी अभार भीर मामर भीर भारत अभार भीर मामर भीरत भारत अभार भीर मामर भीरत भारत अभार भीर मामर भारत भारत अभार भीर मामर भारत भारत भारत भारत ।

> अक्ष (की क्राक्र । क्रिया मैंड का अप्राप्त क्राक्ष इट्टिंग स्मुक्ष । क्रिया शास में प्राप्त का

अभाग अभी कमावा मुक्ति भार अभाग अभी कमावा मुक्ति अभाग अभाग अभाग कार्या क्रिक्त अभाग अभाग अभाग अभाग कार अभाग ॥ देशके कराई संग्रह मध्य के 11 क्रिय का अपन्य क्रिय के क्रिय क्रिय क्रिय क्रिय के क्रिय के क्रिय के क्रिय के क्रिय के क्रिय क्रिय के के क्रिय के क्

इस्ता (स्परका के के क्रिय क्र

प्रभाव प्रते भगव कार्यकार्यः प्रभाव भगव भगव कार्यक भाव आयोग भगव भगव भावण भावण अभावण भी द्वी। भावण भी भावण भावणायः भावण भी भावणायः

भाकत भुमेरत, क दूसि एए, अभ्यत भयत्व प्राप्तक्त ।" कप्यती क्राक्त अभिविद् भग्य अल्पाद्त अभिविद् भूगेरिक क्याप्याते शामिक, बस्त्री प्राप्तक स्वाद्यिन, भागा प्रय कर कर क्रिकारी। प्याव (SANG) विकास अभव के स्ट्री रियाव (SANG) के स्ट्री के स्ट्री

सिन्नि अमि क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां अस्ति।

क्यां क्यां स्वां स्वां स्वां प्रकार कर्णा कर्णा क्यां क्यां क्यां स्वां क्यां क्य

CAMED SOME AME CAN 1 FIR June grace for more some over our, gar are harren बिर्माट कार की राम लाइ भेष धार गाड प्रस्म, 'अभूभूमाला प्रिन अभूर लोग, Mor was sime and A some some soa! किरिया विश्वीका भराव अराह काई प्रश्न की। (अ कियर भार उपते। विश्वेष पिठमवाकी arrage some simon, MARCA MA MARCHY, अस भार भार भार मिक्स क्षार हेलार कि

& NOT ELON LODY WELL the BRICH ELDE BRIEN BANG MAYAT WANTER DOV DOVEN GAT MASSAL TON THE SURE DEMY They should amen exercis अभी एक, योक योक, or or annow wer १ मीम अभाग विवस्त अवेशाह। AR ON GIR THEN ELT ON CONNY, RUL IN D INON 2004 WAR 3 CE 1 indras war which made with, व्यक्तिक श्रिक अभापन मूल भाग करिय ग्रह्म खरुराह मार्थ मार्थ करून अर्थेशियान 188 JUNEN 1802 08 384 1

JUE MAL GAME ACOUR MAL "JUNE JUNE A CHARMA SU",

JUNE MANA CAM EMARA SU",

JUNE MANA GAM EMARA INGENIA I

भूभारक भीभूक भूभूक भूभूक कार्यक म्यानूक प्रभारक ॥ भूभीय भाग्यक भूभूक भाग्यक कार्यक म्यान भूभीय भाग्यक भूभूक कार्यक कार्यक म्यान स्वाम पिंडे अस्ट्रिक अस्त्री स्थानूक प्रभारक ॥ स्मार के प्रमार क्रिक्ट करते। भूके १९४५ श्राम क्रिक्ट अस्ति श्राम अस्ति श्राम अस्ति श्राम अस्ति श्राम अस्ति श्राम अस्ति श्राम अस्ति अस्ति

अर्थान कामान की उन्हों किया कि तकता उन्ने क्रिया मुक्त क्रिया अस्मार्थ करण कामा करूप करणा क्रिया का ए असूबर, कर्म क्रिया केता व देशर अला ३.व., (अलाव देशर केता के की प्रकार प्रवाद में की का करा प्रवाद की की का करा अलाव की का का का गुरुष्ट का का का का की की का का की की की का का की की की की की की की की

मिन देशी कार्य कार्य हता। कार्य कार्य कार्य हता। कार्य कार्य कार्य कार्य। कीर्य कार्य कार्य कार्य। कीर्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य भीरतिय कार्य कार्य कार्य कार्य भीरतिय कार्य कार्य कार्य कार्य ॥ तिस अरहा अर्थन तिस्य मिर्एक्स करें, अर्थना अर्थन अर्थन तिस्य अर्थाक्या विस्तर अर्थना अर्थन क्रेरीय श्वान सेर्थन क्रेरी वैर्थ अर्थन हिए अ्योग अश्व हार्थ, १९५३म मिर्ग अर्थन त्या करें।

अभ्यान के स्मार्ट असम् क्यू व्यव ? असम् मास क्यू क्यू के स्मार्ट मास्य मेरा, असम् मास क्यू क्यू के स्मार्ट के स्मार्ट मेरा, मेरान के स्मार्ट असम् मेरान क्यू के स्मार्ट के स की अपरेक्षि कार्ने महमम क्रियाल भव क्षिम कार्ने नाह कार्कि। अपने हिरापक क्ष्मियाल अंग्रेस्ट्राट अपने हिरापक क्ष्मियाल अंग्रेस्ट्राट अपने अर्थि अपने अभीत् अक उमार्थ भाग्येन अभीत्म अराक्ष्मियाल अराक्षि

महत्वेद हम मन्ने भराक भारत्य हम एमकाय एमकाय भारत्य हम एमकाय एमका भारत्य हम एमकाय एक, भारत्य हम कार्य महत्वा भारत्य हम कार्य महत्वा भारत्य हम मन्त्रे भारत्य अस्त्रे। ME STAN (NE STAN)

ME MA ANTE METAN!

MA STAN (NE METAN!

MA STAN (NE METAN)!

अध्याम भूमिकक्ष्मणा। अध्या निराह शिक्षण स्ट्रिस क्ष्मण्य अध्या अध्या निराह क्ष्मण्य अध्या निराह क्ष्मण्य अध्या निराह स्थाप। अध्या निराह स्थाप।

भगाव कार मार्गिक मारे क्राया । क्रिया मार्गिक कार्या क्रिया क्राया क्र भिक्त अप्रेम क्रिक्स भूकि क्रा क्राक्त स्थापकि थि। भूकि भ्राव प्रक्रिक्स भूकि अप्रेम भूकि भ्राव प्रक्रिक्स भूकि अप्रेम अर्थ क्रिक्स अप्रेम अर्थ प्रक्रिक्स अप्रेम भूकि अप्रेम भूकि अप्रेम भूकि अप्रेम भूकि अप्रेम

अभी अपनास हुट्ट (हास ॥ भी क्रिक्ट क्रेड्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रेड्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रेड्ट क्रिक्ट क्रेड्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रेडिट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रेडिट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रेडिट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रेडिट क्रिक्ट भ्यात्र क्ष्म अभ्यात्र क्षीतः। भूष्म अभ्यात् क्ष्मातः (यद्मा) भूष्म अभ्यात् क्ष्मातः (यद्मा) भूष्म अभ्यात् अभ्यादः (यद्मा) भूष्म अभ्यात् अभ्यादः (यद्मा)

 THE SAL ENVE WAS " MARTE MARTE Mr (sen min (g) 2 EN NON) were had bet sund भारता भारत स्टूर्य भारत किर प्राणला क्रान, मुद्री मिहार क्षेत्रमात्रीका see sprear त्रम् खम्म रम् , क्रिड हम अंग ॥ राख्न भार भार व्यापाई मुंद्र अभिन अभ्य (भ्या अभिन अभ्य) IN WILLE SUMMENTE (A MINE JA) we was a way war म्पूर नी क्या । ठर्त क क्या अमी अमार अमी- प्राप्त भी । NN COUL IN, EN EN NON 11

३००८ श्रेट के प्राा मेंग्रेट के के के का का के के के के का का के के के के के का के के के के के का के के के के के के आउधार के किया के का उत्ते कि के किया के का

४१ंग टेप्पण । ५८६६ २८५५ क्रेजिय ईट्सड् इप्रजेर्ग्य ईप्प्रमु 266 C

अम्बर क्रम्य क्

प्रमाह भारत में क्षेत्र भारत है क्षेत्र भारत है क्षेत्र भारत क्षेत्र क्षेत

अपम स्प्रम प्रक्रम ॥

अपम स्प्रम प्रमान ।

अपम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम स्प्रम ।

अपम स्प्रम स्प

अर्थस स्पेरामं। अर्थस स्पेरामं। अर्थस सम्मर्गः। रुप्ताम्य स्पेर्यस्य स्पेर्यस्य स्प्राप्तः। अर्थाम्य स्प्राप्तः। स्पेर्यस्य स्प्राप्तः। स्पेर्यस्य स्प्राप्तः। स्पेर्यस्य स्प्राप्तः। स्पेर्यस्य स्प्राप्तः। विष्ण अभाग अभाग क्षेत्र । अस्ति अभागतः । अस्ति विष्ण अस्ति । अस्ति अस्ति स्ट्रेन्ट्रास्ट्र अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति । अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति ।

अपने अपने प्रमान क्ष्म क्ष्म । अपने अपने क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म । अपने अपने क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म अपने अपने अपने अपने अपने अपने ॥ मिन अद्ध था मिन, अभि अप अपलात,

भाव भाव भाव भाव अपने अभागा।

क्षित अह मिला अपने अपलात ।

क्षित अह भाव अपने अपलात ।

मिन अह भाव भाव अपने अपलात ।

भाव भाव भाव भाव अपने अपलात ।

अह भाव भाव अपने अपला अपलात ।

अह भाव भाव अपला अपलात ।

अह भाव भाव अपला अपलात ।

अह भाव भाव अपला अपलात ।

अहला अपला अपला अपला अपलाव ।

अहला अपला अपला अपलाव अपलाव ।

अहला अपला अपला अपलाव अपलाव ।

अप्राची (१ मेकी), उह ता कारण्य तमा आता। अप्राच अप्राची स्थान मीमा अप्राच अप्राचे भीने त्याक रिश्मा मिला (यायव्य अप्रिये भीने त्याक रिश्माण्य-निःचरामा। (यायव्य अप्रिये भीने त्याक रिश्माण्य-निःचरामा। अप्राच अप्राची अप्राची मेलाव्य आगित्य। अप्राच अप्राची सेलाव मेलाव्य आगित्य। अप्राच अप्राची सेलाव मेलाव्य आगित्य। अप्राच अप्राची सेलाव मेलाव्य आगित्य। विरम विने, विरोध करते; भूतिन विदेशहर अक्षिर, अक्षर अक्षर अक्षर कर अक्षर अन्त भूति केर अक्षर कर्म अक्षर केर अक्षर कर्म कर कर्म अक्षर केर अक्षर कर्म कर कर्म

राष्ट्रमानिक ३८६। १८४५ १५४४ मार्च ३८५। १९४४ १९४४ मार्च १

mat sa burganc,

can garbr 1

May 2013) SON 1 21/2

स्मिता के किल कर करें। राक्षा कर के के किल कर

THAT & ABV PR,

रंक पुराक कारत।

्र इसर स्थाप के स्थाप कि

130

स्तु भूरे र र राष्ट्र । अवस्य अद्भार भागा राज अवस्य अरक्ष अभागा राज अवस्य अरक्ष अभागा राज अवस्य अरक्ष अभागा राज अवस्य अद्भार अभागा राज अवस्य अद्भार भागा अरक्ष अस्य अवस्य अद्भार स्थाप अद्भाप अ

प्रक्र स्ट्रिस क्राफ्ट म्यू क्राफ्ट म्यू क्राफ्ट म्यू क्राफ्ट क्राफ्ट

त्राप्त क्षेत्र हात । अर्थेड हार नेत्या क्षेत्र (४ अर्थेड महाडा Spea true Text you अश्रमकार कार्य हरक BE WELL DE मंद्रकार्यक्रमण म् प्राची कित्या के कार्य के किया है। Ben musicalmon) MOBIL VENERA भिक्क क्रिक्स उत्पर्वाक्षक करते । उत्पर्वाक्षक करते । उत्पर्वाक्षक अञ्चलक म्मा के स्था के स्था

संपूर्व सिमा १० सम्मी सम्माउट सम्माद्धः॥ दैं पार्ट मांग उपस्य सिमा सम्मा स्मान समा सारों में मांग ईमांग स्मान समा समाय भीमा हुमाउ समाव स्ट्रिशः॥ अभूम द्वारं भीमा समाय समाय स्ट्रिशः॥ अभूम देवा भीमा सम्माय समाय स्ट्रिशः॥ अभूम स्ट्रिशः समाय स्ट्रिशः समाय स्ट्रिशः समाय स्ट्रिशः ।

क्रिमील में मए क्रम मक ही अगर ही ब्यून। एम कि तिया एम कि सम्प्रिम, की काम, की कामी। MAY ANG MAY SUE मिनिक एक मिनिक भाष, Or parts snowbes व्याद अपने अपने ? क्रिकार, मिनान। esamera se mas re ये कि निर्म में कि हरें। विश्विति हरेंगेंं en war be warns "'अर्थ मर, अर्थ मर।" भारत्यात कर, en en se van rie ल कि अस रिक रिक रेंग, ma Ferma? मिकारी, मिनारी।

गूर्ण क्ष्में लिए ॥ ठारतीय में मार्ख ठारतीय में मारख ठाराय भूख भूख ग्राथ । ठाराय भूखे भूखे । भित्रीय केम्मा उड़ प्रमेश्नी (इंग्र्स म्डमाय ॥ स्थिन अर्थे म्हण्या मेश्न हाय केम्प्या स्था भारत होस्या इंग्रेस होस्या स्था क्षाया अस्त्रिय जान्हरूय ।

रैंग्ये भीवार भारे। भार्य (अमार्व स्मार्ग मार्थ मीवार भारे भूष भारवं हैंगरे भूष भारवं भारा रक्त नेम्में के क्रिसा । राष्ट्र क्रिक क्रिसा के का क्रिसा क्रिक का क्रिक क्रिसा क्रिसा क्रिक क्रिसा क्रिक भार अपट क्षिम क्षित कार्य विका कार्य विका कार्य कार्य

उपम्पादं क्षेपं अध्यादि क्रिय S REPORT EMBLYS मूल त्या भारत, अनुरह कर Mars alassa 1 धुक्ति म परि परि भाग भाग मान ज्ञाकाक भड़ त रंगते कहता, पिछ-मिन्नाम कार जार आभ निक्क प्रकीरमे। by which are to was SWALL GENT ZEE ! सर्व क्यान क्षीय क्रमण अभेष्ट द्राष्ट्रां क्रीड । And work who case year. : १६१४०० प्रिय महाराज्य अभागे, क्रिक्ट र ब्रिस्ट, ज्याके हामीन AN 2002 Wa 9211 क्षेत्र क्षि विक अभिन्न क्षिण क्षेत्र ।। क्षेत्र त्याप्य क्षेत्र अस्तिम् नम् स्थाप स्थाप, क्षेत्र त्याप्य क्षेत्र अस्तिम् नम् स्थाप स्थाप, क्षेत्र त्याप्य क्षेत्र अस्तिम् नम् स्थाप स्थाप, क्षेत्र क्षेत्र अस्ति अस्ति।।

प्राप्त क्षेत्र क्ष्या भाग केल क्ष्या भाग प्राप्त भाग क्ष्या क्ष्या भाग क्ष्या क्ष्या भाग क्ष्या भाग क्ष्या क्ष्या भाग क्ष्या क

क्रियर स्ट्रेस हुए ।। हिंद्र क्रियर क्रयर क्रियर क्रय क्रियर क् स्थित माम कार्य। स्थित माम स्थित काम्यावाद स्थित माम स्थित काम्यावाद अस्ट्रेस स्थिते क्ष्यावाद्यः। स्थिति माम स्थित

अक्राल अक्राल आक्रा, आराकेर, अक्रा अक्रा अक्रा आक्रा अक्रा अक्रा अक्रा आते, "अक्रा अक्रा अक्रा क्रा व्या

अवक्षी अस्ति अवस्ति। असे विस्ते अस्तियः असे अस्ति अस्ति। अस्ति असे अस्ति। some some some some THE OF BY MARIN क्रान्यक्रक भार शैल गंदिकक जी है, thouse planets me ! क्राम्य पर ज्ञाक व्हिंग्रास, अरब कुंग आक् करह दूरा । warne se us भाषा पुरास कर ente come destalla निम्म निम्म द्राप्ति हेल्यार प्रथम आर्थ क्रांच्छ। "भागीक <u>म</u>ुभूभी गार्व, JAM JAM WYSTA भारपारक अर्थे खर्षेते। क्षियह खेळ अभि एक राम वैस एक रामिता मुला अवल हरा SENTAY INTAY OUT, 12841 2009 02 02 11

द्रम्य अस्त क्ष्म क्ष्म । द्रम्य अस्त क्ष्म क्ष्म , द्रम्य अस्त क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म , द्रम्य अस्त क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म , द्रम्य अस्त क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म , द्रम्य अस्त क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म , द्रम्य अस्त क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म , प्रमाणक (प्रमाणक (प्रमाणक (प्रमाणक (प्रमाणक (प्रमाणक प्रमाणक (प्रमाणक प्रमाणक प्रमाणक प्रमाणक (प्रमाणक प्रमाणक प्रमाणक (प्रमाणक प्रमाणक प्रमा

- १९८५ म्यूड स्ट्रास्ट्र १९४६ मुची कवर १९४६ मास स्ट्रास्ट्रास्ट्रास्ट्र

र्रि भाग जमातुर्व Mars som wo Res men 1/12 mans लाकाइ डेल्याड that sure sure sure LILLE MENTER STATES mynnin da da ने कर करादे करादे ह्या के क्ष्युंखा। क्रमीन अस्ति भेरे वरका भित्रं अस्ति त्यात्र श्राम अप्रकार क्या । भूतिकारिया प्रति। उत्तर भूति ज्याति क्या EUS EUS EUS EUS EUS क्षुर्भाषात्व देशक देशक उठ्दा ह्मा भारत

The secy reduction sim alman year For भूर अकर देशिय (सर्ग भूर अकर देशिय (सर्ग sume view excreptly · Man GO WAT '11 अभी लाभिन्द्रिया अरहा were refer there im मिल्र किस अव्यव अवि MARAY AMESTRO-11 ósy or v kézésése. Kr-vogsvási rantun रंडुर अनुव हैं। ये ब्रिस भगाउ मिलाना रहम हमके हमके क्रिक न्यार क्रम्या हिर्द

show the man side outhor MANUEL SUBVE MANA 1 selve megler MANA & MISTAT. SCA भारतीय जिल्ला करता pur wan str pur MY. FRONTANII that swit was some erest plan are small MAN ALOS SELLAN विश्वाः विभक्षि नेवा रिष्ठे अवस हिंगा STORMESTAL I

क्लोम्पुर्त न्यार्व क्रेन कर्यारे देवस्य क्रे

SYREO FORM SIN भूक्तंड अन्तरव रमानेर नेता हे क्रिक् THOUSE STANKENIE न्त्रम राज्यकोवं राज्य MACHE WAS FRIEN owners cranger. अस्त्रायक (यरकार्यक्रा) त्याके किंद्र अर्थिक मुक्की M3 14 5/3. OE (मेर्ट अस्य नर नर ति श्रेष्टि हिर्पात्रेण ने ने मिन फिल् गिर्मिक त्यात्वं विष्णुरेशिक न्त्रामंद्र भिर स्पार देशक अर्डेफर अध्ययनprint reals all IN DIENT DIMINE FRENC IS MAS FOR MAN AND THE THE ANTEN

MITE 5 STARTIN ANGON MANNER MICH (देलाकुला (प्राप्तामान म. GAMENA HYLANDO अम्मिक रंग्रहाल - LEGAS BLANKS MAS (4 21 is burn har क्रिक्ट अक्रिस न्निक्ष ४-मूक्तिका asas authoria LANDS ANYSE COURT COME SUCCESSION MA Course 235 Age Alse myning mignie ग्वद्याद्यकं (ग्र-अप्रेर्स् परस्थावर थर् Ch. 3 2 M SAVE ARTEN TOWN WHAT क्ष्यं रेशकं धरे acoulten sonver-(वाकिस्ट मेर्डिस मेर्डिश)

405 21/4/ 43-CAM/ to a api god! DARLE RISIN WAYN विराधे देशव अनाम MUS JUM ALLS Commé was event ond to sty the अंग्रेड ही स्वार धार भूग महि तिए ४४३ हता. US. IN PENSE BES ALL BERE SIGN ROY MYTHING गरीय इत्सार् ग्रामी ERECT TO WELL Angels. Emmer would CHEL YEAR, THAN YEAR! MA THE THAT THE Tay Fin, Fin 50 8/17, CAT- 5T STAY WATER HE SHOW AND असे प्रम देव देश हैं कि

threing an wire Coma auto aut िलाई सामा ता साम कर्या any ear sur ich Harin wiss. MAN SETTLE BATELER AND BY BURNER क्रेडिकें क्रिके क्रिके NEWS (HOWERNAN) thick are size. में वर्ष है। ज्लाहर उस्मीयमान परंड BARD SINE WAS अप्राक्त का अप्रकार (SAG)। ১০ই কৈছি COMES AME

रेखं (माक साकात सम्मा) स्वाम खांन संद्राम न्यां स्वाम खांन संद्राम स्वाम, संखं कुंका में द्राम स्वाम, शिवाम साम स्वाम स्वाम उत्ताम साम शिवाम उत्ताम साम होयं।

नक्षम सेकम क्षाकां उदा। नक्ष्य (माराम के एम्स गार राधक केसेस सेक कास गाम सुर्के कासार मान क्षाके कामाय जाने कहा। हाश्य त्वम जह हारं मार्के विसम्ब हार्के सेसार ख्रांगे। हिल रेंप्य क्रेडेंडिया ह्येंसे।

rice remy

હેંક શ્વલ ॥ ३.હ. <u>સર્કેએમ (અપ્પર</u> મ<u>ૈલને</u> ગ્રહ્મ ગર્ફ અહ્ય પર્ફ જ્ઞસ સ્વય નોર્ફ્સ

भाष्ट्रम १० अपमान अंद्रेश अपमाय कार्या भेष १७ रेस अपमाय अपम BU LENNI COMICACI SUE LENNI COMICACI (UE ME NI MANIE MA ELLUCE COM ELLUCE COM OSIEN MANIE

र्ट्डिक्स इक्स्स्ट क्षा (६ ज्यापट प्रमाद्या ।। अवाद्ये प्रमाद क्यापट हुम्मी अपद्ये अप्रमाद क्यापट स्थापी अप्रमाद अप्रमाद क्यापट स्थापी (६ शक्ष होष्ट्रचे १६ शक्ष्यंच्या)

मेथा देया अप्रायम् ॥ भारती विस्ता (अवी अप्रायम् ॥ भारती महिले अस्मित्रं भारती ॥ भारती महिले अस्मित्रं भारती ॥ भारती भारती अस्मित्रं भारती ॥

तिमामन २०१६ LE HO WINTONIANI MA ELLE LA COLOMA SUL STÉCHME EUJ BIL ME PLENCE COLOMA SUL ME ELL DE SENE ALO. ME CAL DINNEL MÀ MALONE

> पश्चीम भाषामं वस्तामा। आकार वृद्धं आहेर हात प्रवाद हिंद्यं प्रशिवमान वृद्धां हुंद्रं प्रशिवमान वृद्धां हिंद्यां प्रशिवमान

 Alsia svasy 11

Chys wir warn's

Anth Charge

Thys wir warn's

The act (ardin's

Super sig

The warn's the minery 11

The country of the chimical of the country of the cou

हैंश् काटमार्थ काटमार्य काटमार्थ काटमार्थ काटमार्थ काटमार्थ काटमार्थ काटमार्थ काटमार्थ काटमार्थ काटमार्य

প্রকুপ ১০১২ ১০১১

in a subly it suco. मिलड लाए THE OF MAN FAMOURS SPAR (JUL) Alleni rui syar ila किल अल THE CALL CALLE STATE FORM Center tem temporale. SPOR (SMI) ELES EMM IN MENTER saisia notalite भाक्त के भाक्त आकार की आक्राया CHA CA CEAR LEMENTOS I LALENDO I 1220 CELAN 11

They were won't way अह तर केल कथन के हिं मिड़े हिंग है है कथन के हिं अह ति के है कथन के हिं LELLE - BLDIL SIBILE (DISTAL रें केंद्र अह अंध्रे अधार्य 11 ATE FRANK 1 cas sen of minera Sin was. CHENICO SUCH PUNT (BATTAMAT) AG. Sign strong Sta wan- surve wir out of ENCH ENCH F ment has sale was

ર્તાનું ૧૧૧૨ ગામ

रेंद्र मूँख, बार्ड में को अकार

का न्या ए कार्य कार्य ॥ १९५० कार्य उत्तक्ष्य विकास कार्य रहि १८८

हुर ध्रुष्ट एएस ब्राज्ञं ॥ ब्राग्ड् अन्म्य ध्रम्य स्मेर्ग्रे । श्रम्भ स्मार्भ स्मार्थः भारम स्मार्ज्य हुन्ने (अभार्षः

 मंद्र क्रिक्ट क्रिक्ट । भूके क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट । भूके क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट ।

> प्टर नेत्य प्रस्त क्ष्य क्ष्य । स्प्रं यम्प्रेस भ्रम्य म्रास्त्र, स्प्रं भ्रम्भ भ्रम्य म्रास्त्र,

स्य १४ १८ ४५ मार्ग त्रक्रा। त्या भय भ्रायक स्थाप भूम भयात्र भवात्र अस्तु भूमी भय नेकार्ज अभी

> प्रम अप्र क्ष्म अप्र अप्र (अप्र क्ष्म सम्मीरण्ड अप्रः) (१४४ क्ष्म सम्मीरण्ड अप्रः)

स्तित अक्षिय ॥ स्तित अक्षिय । स्तित स्तिय क्षियं त्राम्य श्वा स्ति स्तिय स्वयं । स्तिय प्रति स्तिय स्वयं । स्तिय त्राप्त स्ति स्वयं । स्तिय त्राप्त स्ति स्वयं ।

الاسلام معليوء وه ولا لا لامغ ممليوء وه مخرف لامغ ليسلوه عملاً مسلامه موليون ملاما المرسلاه عياً ا يونيور على ملايوس بلغ ملائير المنهميران ا ملائير ولايا ماية ملية علياء

अति २ १५ ७५५% ४ १४५४ aver aver 11 Trans alze som som Tes mesum 1 Tes mes sign

(कार्य १८४८)। क्षिक्षिक्ष क्षिणे ज्याने इर्णुक्षिं एक्ष्य ज्यानेस्ट्रें (यह भाजने सिंदे कार्ये

में को भाग ॥ भाग के अपमें के प्रमुख मीमा भाग के अपमें के के मुक्त भाग के के में के स्टूड के ब्राम में में - विपान कि स्टूड के ब्राम भाग कि स्टूड के ब्राम भाग कि स्टूड के ब्राम भाग कि स्टूड के ब्राम

•પૂર્નફર્મ 3એ (ભાષક્ષેત્ર 7એ 23 अकरम (यागड अर्द्याम राज्ये) विक्रिय क्रमान देखती, अक्रमा (अर्द्याम क्रमान

નાક હ્રાહ લેડમં માક કે કહ્યા । પાત પંચાન મારાં, આપ્રૈય ક્રોફોમાં, હ્યાનુષ્ણ તૈલ્લક પ્રશ્વ સ્પાન હ્યાડવ-હ્યાઇ-સ્પંચલ સ્પાન

वैतर्भः वैन्य सम्मद्धः। भाषानं वर्द्धनं स्ट्रियः अत्य द्रह्मः मध्यादः मध्यकः

द्याप्त अध्या अस्ति स्ट्रान्स्य अध्या व्याप्ति स्ट्रान्स्य व्याप्ति स्ट्रान्स्य स्ट्रान्य स्ट्रान्स्य स्ट्रान्य स्ट्रान्स्य स्ट्रान्स्य स्ट्रान्स्य स्ट्रान्स्य स्ट्रान्स्य स

र्गाष्ट्र अक्ष अर् हार ॥

2957 50 (YUM) 83. Telal الله المعاملة المعا

રજ ખ મામા<u>વ ક્રેટ્સ હિલ્</u>ટ મ**રમ્પામા**લવે પ્યાવ ભાષ્યાલ ત્યુપાસિવે ચંદ્ર ગેરુ પ્રમાનાવટ

CANN REPURY 11

म्यास भारत क्या विस्त ।। स्वास्त क्या स्वास्त स्वास्त स्वास्त म्या क्या क्या स्वास्त्र स्वास्त्र म्या स्वास म्या न्या स्वास स

२०११ ४० (पाक्रीयः सॅर्जियम् A CA (1826) 244, 1824 19911 2484 ASA SULUA BUADALA 2446 ELEL BUNN AUG ULE, 2460, 1816, 1816, 1814 1816, 1810, 1814 1 2181, 1814 INI 1816, 1

मेरेशक खुला सामा समा स्था । भ मेरेशक खुला मामा माम मार्डेडीमामा इत्या ! मूस्या खुला गर्डाडीमामा इत्या ! गर्डाड मार्डिंगमा । भारता मार्डिंगमा । भारता मार्डेडिंगमा । भारता मार्डेडिंगमा । भारता मार्डेडिंगमा ।

२०९१ २४ (माजुन्म् रूप्यम

र्रेप्ट देकां आधार क्रिस Thys was seen 1 अक्ष अराज्य अरु ज्याह STOW MESTAL MAKE munn enses gitzgä gus ma wow ममलार महिमाला RACHIM GUSIN, भी ल्याबर लागन ना ४७/ २०५ इल ॥ वृद्धि श्रुष्टिंग दिग्यन क्षेत्र क्ष्म् भवभ भूग डि, IN SUR WELL WELL MENT 1 She were noted ways, shi may स्ट्रिल हैं कि हैं कि ज्या जायात मुद्धः हार YOU DANGEN, one share enver क्रक्ल र्रेंग्रं मैंप्स। 4 (MNX १४ जिएक अं

40

अहं क (भुर्भ में मि।। इश्च क्रियां में बंदे क्रेस् इश्च क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां में क्रियां क्रियां अर्थे क्रियां उश्चित अर्थे क्रियां

Mar (m. 2 mm. Re) II Mar (m. 2 mm. Luta (m. Mar (m. 2 mm. Luta (m. Mar (m. 2 mm. Mar) I Mar (m. 1 mm. m. 1) Mar (m. 1 mm. m. 2 mm. M. 1) Mar (m. 1 mm. m. 2 mm. 1) Mar (m. 1 mm. m. 2 mm. 1) Mar (m. 1 mm. 1) & (m. 1)

૦૭૧**૪** ૬૦ ખિખમાં કુંભુનં જુન્

١.

भाग हात कि कि क्षाता। अब अविका क्षाता हिला भागक के अविका क्षाता हिला भागक के अविका क्षाता हिला अविका क्षाता हिला भागक के अविका क्षाता है।

2757 Paragasi Awa હ્યામાં સ્પાય સ્પાય ક્રિક્સમાં લાક્ષ્ય ક્રિક્સમાં ક્રિક્સમાં લાક્ષ્ય લાહ્યામાં ક્રિક્સમાં લાક્ષ્ય મહ્યા આપ કર્મોમાં લાક્ષ્ય મહ્યા આપ કર્મોમાં લાક્ષ્ય મહ્યા ક્રિક્સમાં લાક્ષ્ય મહ્યા ક્રિક્સમાં લાક્ષ્ય મહ્યા ક્રિક્સમાં લાક્ષ્ય કરિયાના ક્રિક્સમાં લાક્ષ્ય કરિયાના ક્રિક્સમાં ક્

११ अस्मित्व अभित्र अस्ति हैं हिस्सू अहस्ता अभित्र अस्ति हैं हैं डेंड्रा हैं हैं के स्ति, अस्ति अस्ति हैं हैंड्रा हैं हैं के स्ति, अस्ति अस्ति हैं हैंड्रा हैं हैं के स्ति, अस्ति अस्ति हैं हैंड्रा हैं हैं के स्ति, अस्ति हैं स्ति हैं हैंड्रा हैं हैं हैं के स्ति, अस्ति हैं स्ति हैं हैं हैं हैं से स्ति अस्ति अस्ति। अस्ति हैं स्ति हैं से स्ति की स्ति अस्ति अस्ति। अस्ति हैं स्ति हैं से स्ति की स्ति अस्ति अस्ति। अस्ति हैं से सिक्ति अस्ति अस्ति अस्ति। अस्ति हैं से सिक्ति अस्ति अस्ति अस्ति। अस्ति अस्ति। अस्ति अस्ति। अस्ति अस्ति। ente (minus a ser a minus a ser a minus a ser a minus a minus

ech ech n ansing the commatern ansing the same of a and anner a sert achie of anner a sert achie of sir or con rem show shows

25 27 (B) 184.

स्पिर्टिय कर्ते ध्रावस कर्त से हु।। कार्ये टियकं सुक्षिते पांच करण कार्या के सुक्षिते कार्या करण उसं अस्त्री कर शखर करण जसका ताथ कर केतं करका में सुर्छ। जसका कार्ये कर्ता करण कर्ते।

So NAGINA.

Latoral Later By In In the Sound of the Sound

ンタシア

अपन्यात अपन्य हात अपन्यात अपन्य हात अपन्य अपन्य अस्त्रिक्त अपन्य अपन्य अपन्य अपन्न अपन्य अपन्य अपन्य अपन्न अपन्य अपन्य स्त्रिक्त अपन्य अपन्य स्त्रिक्त अपन्य अपन्य स्त्रिक्त

benne arg surva arg 11

mus arm arice saic

mus arm rivar and

shiri (rich finh pin)

sis on survi sigh eng 1

ymana erag is ny

mi u temi sigi (s. 1)

surve ai sar (s. 1)

इन अस्मिन्ह

મહાર્ય કે પ્લે વહે તે કે મેં મહાર્ય મામ ઉપયોગ હતું કે કુ મુખ્યા કા મામણ (પાડક કે કુ મેં મેં મામ હતું (પાડક આપ્રામ કે પ્રામ કે દુધા દેવો || આપ્રામ કે મામ કે દુધા દેવો || આપ્રામ કે મામ કે મામ કે મેં મેં મેં મહત્ર હમાં મુખ્ય (અમહ

भागां अपादं करें: अंदा । क्रियां श्रेस अक्षेत्र अपाय भागां स्ट्रांस क्रियांस भागां स्ट्रांस क्रियांस भागां अंदर कर्य स्ट्रांस भागां अंदर अंदर्श स्ट्रांस श्रेस अक्षेत्र स्ट्रांस

>9?? ૧૦ માનુમુશ્કર વૈયુવાનુ

was regimen! er jen armenn जनक श्रिक्र । enovia resing muím mend vál रेएके खुरुष कंग्छर ए भाग क्षेत्र रहा हार्स मार्थ ्वम्यामानं साम । भाष्ट्र राज्यां स्थान्त्र sus mays see four ठाकार मरेशाला ॥ रास्मार्य में विधिर 9444 1917

नाम मामीक विक्र हैगा Me ama me AL WORK THE THE avora result some was some sign 18 28 24 35, MY wife watching अगर्य अभाग्य क्रांत्र क्रांत्र ॥

क्र अमेर भारी seem some was sure युर्डि एक्ट्राव्ह क्याने। विद्युमाला उर्भव उर वित्युक् मीक्मानिका, अभी के किर हैंसे में अध्य स्थार grang orgas from विकास रीय जारता करी छ BANE SIELMUZ 11 tha owns arithur Mary W Wash રબુરાનું મુજબ અખ विक इस किए कि any anna duya end क्षिक्षा भारत ने ने ने भूका करा करा करा है। खरे बराब मंत्र घरर रु मेख्येन रुपम 11

rans | 15 - 15 |

राक्त अभिर अभिर मिकि आक्र भार भार है। was ware by the ever cours exerting; & or comme request मका राम् शर्म भूका राज्य रिखं रही तराम EUN WINE II my car was mos eng भुक्ति दत्य द्वा अराष् अश्वर रेखिलं प्रध्या 13 AN अहरता। मिलान-विभाग विषित्भिकी mostly comets AND KAR WENT THE marchare aus 11

भ्रत्यक्षम् १४ प्रकार

क्र ए अस्ति १० मित्र हाट मित्र, स्यापार्व क्यापेश्व TO COTTON AT, TO COTTON, OF OF MY A RIVER CH HAVEL EDVERY Franka Forces 1 गर्भ ए एक्ट्रिस काल अक्टूम द्रिक, स्मीय भरतह जाएड भूर कर भूकर कर केर gar expires my भागिक जाजार शिक्षा 25 or symbol 1 56 20AB

MESON

री अरु क्षणं खानक हैं। अर्थ एक नीम्हु आश्चर भर कार्य क्षणं Mys 45 (8721) ग्रम्भ व्याप सर्वित My sa are inter our, रियर प्रधार अध्येह आई star Ever 2011 vieter me som wars भारते कराई अरहाई हमाई अराहे कराई अरहाई हमाई अवन तम हिला received my cours over worken ser " न देशक विका अल्ला I REDWINE WARE 5 e 45380

গ্রন্থপরিচয়

.

রবীজ্রনাথের আয়ুকালে স্বডম্ব গীতিকাব্য -রূপে বৈকালীর সহিত পাঠক-সাধারণের পরিচয় ঘটিয়া উঠে নাই। অথচ জানা যায়, বিভিন্ন সময়ে এ বিষয়ে কবির আগ্রহ ছিল। প্রথমতঃ ১৯২৬ সালের মে মাসে (১২ তারিথ। বাংলা ২৯ বৈশাথ ১৩৩৬) কবি বথন অন্তম বার বিদেশ ভ্রমণে বাছির হন তাহার পূর্বেই একথানি খাতায় আয়ুপূর্বিক বৈকালী কাব্য স্বহুত্তে লিখিয়া প্রবাদী-সম্পাদকের উদ্দেশে পাঠাইয়া দেন ও লেখেন:

"বৈকালী" লোকহন্তে পাঠাচ্চি। কালিদাসের চিঠিতে এর বিবরণ পাবেন। বেমন ইচ্ছা ছাপাবেন। পরে এগুলি বই আকারে বের করব।··· ২≥ বৈশাধ ১৩৩৩

> স্থাপনার শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর⁰

ষিতীয়তঃ কবি মুরোপে থাকিতে যথন দেখিলেন 'হাতের অক্ষর থেকেই ছাপানো চলে। বিশেষ কালী দিয়ে লিখতে হয় এল্যুমিনিয়মের পাতের উপরে', তথন ষেভাবে লেখনের কবিতিকাগুলি একত্র লিখিয়া প্রচারের ব্যবহা করেন (আখ্যাপত্রে ছান-কাল: বুডাপেস্ট /২৬ কার্চিক/১০০০), অহুরপভাবে প রি ব ধি ত বৈকালীর গান-কবিতাগুলি দিতীয়বার পর-পর সাজাইয়া উহার আখ্যাপত্রে লিখিয়া দেন: ১লা অগ্রহায়ণ/১০০০/বেল্গ্রেড্।

দ্রষ্টব্য প্রবাসী, আখিন ১৩৪৮, পৃ ৬৫৯। সম্পাদক শ্রীরামানন্দ চট্টোপাধ্যায়কে লেখা চিঠি। কালিদাস, শ্রীকালিদাস নাগ।

গ্রন্থপরিচয়ে, উন্নিথিত বৈকালী 'প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপি বা পূর্ব-বৈকালী আখ্যায় অভিহিত। শ্রীমতী শাস্তা নাগ উহা বিশ্বভারতীর রবীক্সদনে দান করিয়াছেন।

১ লেখন ও বৈকালীর উল্লিখিত তারিখ-তৃইটি যথাক্রমে ১৯২৬ সালের ১২ ও ১৭ নভেম্বর। অর্থাং, লেখন এবং এই বৈকালী লেখায় য়ানগত ব্যবধান য়েমন অল্প, কালগত বিচ্ছেদও তেমন নাই বলিলে চলে। লেখন বা বৈকালী-লিখন অবশ্রুই এক দিনে হয় নাই। বালাটন ফ্যুরেডের আরোগ্যভবন হইতে কবি বেল্গ্রেডে আসেন ১৫ নভেম্বর তারিখে। এই বিদেশ-শ্রমণের তথা বহু গান-রচনার বিবরণ পাওয়া যাইবে শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ প্রণীত 'কবির সঙ্গে য়রোপে' (১৩৭৬) গ্রন্থে।

ছৃ:থের বিষয়, এই পরিবর্ধিত 'উত্তর-বৈকালী' বা 'নব-বৈকালী'র ই অনেকগুলি পাতা আশাস্করণ ছাপা না হওয়ায়' বিনটের পর্যায়ে পড়ে এবং বছ বংসর পরে বৈকালীর আংশিক সংকলন ও স্বল্পমাত্র প্রচার হয় ৭ পৌষ ১০৫৮ তারিথে (২০ ডিসেম্বর ১৯৫১), ক্ষীণতর আকারে পুন:প্রচার ১০৫৯ ফাস্কনে। ৪ যে বা যে-সকল গ্রন্থে পত্রসংখ্যা সর্বাধিক, তদম্বায়ী এই পূর্বপ্রচারিত কিন্তু খণ্ডিত বৈকালীর এক স্বচীপত্র পরে দেওয়া গেল; ইহাতে রবীজ্রনাথের স্বহস্তে লেখা পৃষ্ঠাক্ষে অম্পান করা ঘাইবে কতগুলি পাতা বা কতগুলি রচনা পূর্বাপর নই হইয়াছে এবং সবগুলি সম্ভবতঃ কিরপ পারম্পর্যে সাজানো হয়্ব

এই নব বৈকালীতে 'প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপির প্রায় সমৃদয় রচনাই গ্রহণ করা ইইয়াছিল এরপ অফুমানের কারণ পরবর্তী আলোচনায় স্পাষ্ট ইইবে। প্রবাসী মাসিক পত্রে ১৩৩৩ সনের আঘাঢ়-কাতিক ৫ মাসে 'বৈকালী' পর্যায়ে ৩২টি রচনার প্রচার, কিন্তু 'প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপিতে রচনা ৪১টি। প্রবাসীতে কয়েকটি রচনা 'বৈকালী' পর্যায়ের বাহিরেও ছাপা হয়, কয়েকটি রচনা কষ্টিপাথরে সংকলন করায় দ্বিভীয়বার ছাপা হয়, তাহা পরবর্তী দ্বিভীয় স্ফটীপত্রে যথাস্থানে যথাবিধি উল্লিখিত।

এ সম্পর্কে ১১ জান্ত্রারি ১৯২৭ তারিখে [২৭ পৌষ ১৩৩৩] বর্লিন হইতে একথানি চিঠিতে প্রশাস্তচন্দ্র মহলানবিশ রবীন্দ্রনাথকে লেখেন: 'কালিতে-লেখা সবগুলোই ভালো হ'য়েছে। পেন্সিলে-লেখা অনেকগুলি নই হ'লো। প্রধান কারণ অনেক জায়গায় লেখা ভালো ফোটে নি, মথেই চাপ দিয়ে না লেখায় দাগ বসে নি, তার উপর অতিরিক্ত fixing solution দেওয়ায় দাগ মুছে গেছে। ... ১টা machine আর পুরো সরঞ্জাম (কাগজক্ষ) অর্ডার দিয়েছি, আশা ক'রচি ফেব্রুয়ারি মাসের মধ্যেই শাস্তিনিকেতনে পৌছবে... '

বৈকালী গ্রন্থ সম্পূর্ণ না হওয়ার ও কবির আয়ুদ্ধালে প্রচার না হওয়ার কারণ স্পাইই বুঝা ঘাইতেছে। উল্লিখিত হাতের লেখা বা লেখান্ধন মথামথ ছাপাইবার মন্ত্র / উপকরণ শান্তিনিকেতনে আমে কি না, ব্যবহারের চেষ্টা হইয়াছিল কি না জানা মায় নাই।

নির্বিশেষে সকল প্রতির পত্রসংখ্যা সমান হয় নাই। কতকগুলি পাতা একেবারে নষ্ট হয়; সংরক্ষিত অক্তান্ত পাতাও সমান সংখ্যায় পাওয়া যায় নাই।

ক্রমিক সংখ্যা এই তালিকারই কিন্তু উদ্ধৃতিচিহ্ন দিয়া যেগুলি দেখানো হইল, (সেরূপ চিহ্ন না দিয়া) নির্দিষ্ট গানের পরে পরে কবি স্বন্ধ: লেখেন। কবি এই বৈকালীর কোনো কোনো পাতায় কেবল এক পিঠে অঙ্কপাত করেন বাংলায়, কখনো বা ইংরেজিতে।

॥১॥ উত্তর-বৈকালী। লেখাঙ্কন: কার্তিক-অগ্রহায়ণ ১৩৩৩ খণ্ডিতভাবে প্রচার: পৌষ ১৩৫৮ ও ফাস্কুন ১৩৫৯

ক্ৰমিক সংখ্যা স্ফুচনা	রচনার স্থান-কাল মুজিত পৃঠাক
'২৬'। আপনারে দিয়ে রচিলিরে	১ বৈশাথ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন ২৯
'২৭'। তুমি কি এসেছ ^৬	১ বৈশাথ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন 🌼 😶
[২৮। আমার প্রাণে গভীর গোপন	
২৯। হার মানালে ভাঙিলে অভিমান	
৩॰ । বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে	
৫০১ । আর রেখো না আঁধারে	৩১-৩3]৬
' ০২'। নিশীথে কি কয়ে গেল ^৬	৭ বৈশাগ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন ৩৫
'৩৩'। পথে যেতে ডেকেছিলে ^৬	৮ বৈশাথ ১৩৩৩। শাস্তিনিকেতন ৩৬
	1

৬ নটার পূজা'র গান বা অফুরপভাবে ভাবিত সমকালীন অন্ত গান কবি একত্ত সন্নিবেশের কল্পনা করিবেন (নষ্ট ২ পাতা বা ৪ পৃষ্ঠায় রচনাসংখ্যা ২৮-৩১) ইহা অহুমান করা গেলেও নিশ্চিত পারম্পর্য স্থির হয় না এবং ?-চিহ্নিত একটি গান সম্পর্কে কিছু সংশয়ও থাকে। নটীর পূজা'র এই গান আধার-পাণ্ডুলিপিতে সম্পূর্ণ পাওয়া গেলেও, কোণাকুণিভাবে নীল পেন্সিলের একটি রেথায় লাঞ্চিত, স্থাবার 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপিতেও স্থান পায় নাই। কিন্তু ইহা যে নটীর পূজা নাটকে প্রথমাবধি প্রযুক্ত অবিমারণীয় এক গান ইহাও সত্য, এবং উত্তর-বৈকালী -সংকলনের কালে রবীন্দ্রনাথ মত-পরিবর্তন করেন নাই তাহাই বা কে বলিবে ? লক্ষ্য করিতে হইবে নটার পূজা'র সর্বশেষ গান ('আমায় ক্ষম হে ক্ষম') উভয় বৈকালীতেই বজিত হইলেও, তাহার পূর্বপাঠ ('আজি এই মম সকল ব্যাকুল') অস্তত উত্তর-পরিকল্পনার অঙ্গীভূত (ক্রমিক সংখ্যা ৩৮ / বর্তমান গ্রন্থে '৪৩')। অর্থাৎ, কবি এ ক্ষেত্রে মত বদলাইয়াছেন বা অবহিত হইয়াছেন— হয়তো ইতঃপর্বে অনবধানে বাদ গিয়াছিল। অপর পক্ষে 'পরবাসী চলে এসো ঘরে' এই দীর্ঘ কবিতার স্থান-সংকুলান না হইলেও (উত্তর-বৈকালীর পৃষ্ঠাসংখ্যার হিসাবে সেরূপই দেখা ষায়), 'প্রবাসী'-পাণ্ডলিপিতে আরও ৩টি গীতিকবিতা তো আছেই (পরবর্তী অর্থাৎ দ্বিতীয় স্থচীপত্রে গ-চিহ্নিত) বাহা উত্তর-বৈকালীর অন্যত্র সংকলনের কথা नम्, रम्था । यात्र ना, তाहातहे এकि -- 'आधारतत नीना', 'टह जितन्छन', 'मत्रन-

98	বনে যদি ফুট্ল কুন্তম	ফাৰ্ব্বন ১৩৩২	99
٥¢ ا	এসো আমার ঘরে	ফাৰ্ব্ধন ১৩৩২	৩৮
৩৬	আপনহারা মাতোয়ারা	ফা ন্ধন ১৩৩২	93
७१ ।	ওগো জলের রানী	कान्त्रन [?] ১७७२	8 • - 8 :
७৮	আজি এই মম সকল ব্যাকুল [আৰ্	के थ निताना कूक्षा वत्रगणाना।	
	মহুয়া। ২৫ শ্রাবণ ১৩৩৫] বৈশাথ ১৩৩০ [শান্তিনিকেতন]	९२- 8७
೦ಾ	। হে মহাজীবন	বৈশাখ ১৩৩৩	88
8•	। সে কোন্ পাগল	৮ দেপ্টেম্বর ১৯২৬। বল্টিক সমুদ্র	8 0
83	। কার চোথের চাওয়ার	৯ দেপ্টেম্বর ১৯২৬। হাম্ব্র্গ	8 9
8 २	রয় যে কাঙাল	১০ দেপ্টেম্বর ১৯২৬। হাম্ব্র্গ	8 9
80	। ছুটির বাঁশি বাঙ্গল যে ঐ	১৭ দেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	86
[88]	আকাশ, তোমায় কোন্ রূপে	১৭ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	8 2
80	তোর ভিতরে জাগিয়া কে ধে	১৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	e•]9
८७ ।	নাই, নাই ভয়	১৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ম্যুনিক	43
89 (আমার মৃক্তি গানের হুরে [আম	ার মৃক্তি আলোয় আলোয়]	
		১৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। স্থার্বর্গ	લર
86	সকাল বেলার আলোয়	२० मেल्टिश्वत ১৯२७। श्राम् वर्ग	৫৩
1 68	ভালো লাগার শেষ যে না পাই [মধুর, তোমার শেষ ষে না পাই]	
		২১ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। স্ট্র্ট্গার্ট্	€8
¢ •	চাহিয়। দেখো রসের স্রোতে	২৪ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। কল্যোন	e e
621	তুমি উষার সোনার বিন্দু	২৪ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। কল্যোন	69

সাগরপারে' নটার পূজা'র গীতিগুচ্ছে সাজানো হয় নাই তাহাও বলা যায় না।
নটার পূজা ১৩৩৩ বৈশাথের মাদিক বস্থমতীতে প্রকাশিত, দেই স্থন্তে '২৭',
২৯, ৩০, ৩১, '৩২', '৩৩', ৩৯ সংখ্যা-যুক্ত গানগুলিরও বহুল প্রচার— বিতীয়
স্চীপত্রে মাদিক বস্থমতীর (বৈশাধ ১৩৩৩) পৃথগ্ভাবে উল্লেখ করা হইবে না।
নই এক পাতায় পর-পর এই তুটি গান ছিল ইহা অস্থমান নয়, প্রভায় বলা চলে।
কেননা, রচনার পারম্পর্যে যেমন, তেমনি আধার-পাণ্ড্লিপিতে ও লিপিচিত্রিত
মাদিক বস্থমতীতে (গীতাইক: বৈশাধ ১৩৩৪) ইহাদের সন্নিবেশ লক্ষ্য করিলে
অস্তারপ কল্পনা করার কোনো কারণ নাই।

<>। আপন গানের টানে, আমার	২৫ সেপ্টেম্বর ১৯২৬। ড্যাসেশ্ডফর্	¢ •
৫৩। আপ্নি আমার কোন্থানে	৬ অক্টোবর ১৯২৬। বলিন	СÞ
<। ওগো হুন্দর, একদা কী জানি	১১ অক্টোবর [১৯২৬] প্রাগ্	6 2
৫৫। কোথায় ফিরিস পরম শেষের	১২ অক্টোবর [১৯২৬] প্রাগ্	৬০
৫ ৬। আকাশে তোর তেমনি আছে	২০ অক্টোবর [১৯২৬] ভিয়েনা	৬১
<। পথ এথনো শেষ হল না	২৭ অক্টোবর [১৯২৬] বুডাপেস্ট্	৬২
৫৮। দিনের বেলায় বাঁশি তোমার	৩০ অক্টোবর ১৯২৬। বুডাপেস্ট্	& (
৫ ন। পাম্বপাথীর রিক্তকুলায়^৮	৯ নবেম্বর ১৯২৬। বালাটন ফারুরেড।	
	হাদারি	৬8
৬০। মাঘের বিদায়ক্ষণে [আশ্রমবালিক	গ : আশ্রমের হে বালিকা]°	
১७ टेब्रार्क [১ ७	৩৩। ২৭ মে ১৯২৬] রোহিত সাগর 💩	a-66
[७১। पिनावमान: वाँ नि यथन थामत्व घ	রে] ፡ ০	
২৫ বৈশাখ ১৩৩	০০ [৮মে ১৯২৬] শাস্তিনিকেতন ৬:	د ۹ – ه
৬২। তব অমূর্ত্ত বাণী [অরূপ, তোমার	বাণী] ২১ নবেম্বর [১৯২৬] বুকারেস্ট্	92
७०। বাঁশি षामि वाकारे नि कि	২৪ নবেম্বর [১৯২৬] ডার্ডানেলিস্	৭৩

৮ গানের পর্যায় শেষ হইয়াছে কল্পনা করিয়া (বস্তুতঃ তাহা হয় নাই) কবি অতঃপর কিছুকাল পূর্বে রচিত (১৩৩৩ বৈশাবে ও জ্যৈষ্ঠে) ২টি কবিতা এই বৈকালীর শেষে সংকলন করিলেন। (উভয়ই অনেক পরে, ১৩৩৯ ভাদ্রে, পরিশেষ কাব্যের অঙ্গীভূত হয়।) তঃথের বিষয়, বৈকালীর বিরলপ্রচার কোনো কোনো কপিতে 'আশ্রমবালিকা'র সবটা পাওয়া গেলেও, একথানি পাতার অভাবে 'দিনাবসান' কবিতার আহ্মমানিক ও তাবক খোওয়া গিয়া কেবল শেষ তাবক পাওয়া যায় এই বৈকালীতে। বিকালীতে ও পরিশেষ কাব্যে মৃথ্য পাঠভেদ এই ষে, প্রথম ৬ ছত্তের গুচ্ছটি পরবর্তী ৬ ছত্তের সহিত 'ঠাই-বদল' করিয়াছে।

১০ এই খণ্ডিত বৈকালীতে কেবল শেষ শুবকটি দেখা যায়। মূল রবীক্রপাণ্ড্লিপিতে বিভিন্ন সাময়িক পত্রে ও নৈমিন্তিক পত্রে (জন্মোৎসব-দিবদে শান্তিনিকেতনে লিপিচিত্র-রূপে প্রচারিত) ৫ শুবক থাকিলেও, এ ক্লেত্রে ৪ শুবক ছিল মনে হয়—পরিশেষ কাব্যেও সেইরূপ। বাদ গিয়াছে পূর্ণান্ধ কবিতার চতুর্থ শুবক। কৌতৃহলের বিষয় এই য়ে, বৈকালীর 'প্রবাদী' পাণ্ড্লিপিতেও ৪ শুবকের বেশি নাই এবং সে ক্লেত্রে বাদ দেওয়া হইয়াছে 'সম্পূর্ণ' কবিতার শেষ শুবক। বর্তমান বৈকালীতে সবগুলি শুবকের একত্র সংকলন; এ কবিতার এই রূপও কবি বারংবার

পূর্বপ্রচারিত বৈকালীর উদ্ধিথিত স্ফ্রীপত্রের পরিপ্রক বা অন্থপ্রক হিসাবে আরও পূর্বের বৈকালীর ('প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপি) "ক্রমিক" সংখ্যা -সহ এক স্ফ্রীপত্র এখানে দেওয়া আবশুক। তাহাতে প্রবাসী মাসিক পত্রে আংশিক প্রকাশের বিষয় ষেমন জানা ষাইবে তেমনি উত্তর-বৈকালীতে আছে বা ছিল বলিয়া ষেগুলি দেখা যা য় অথবা অ য় মা ন ক রা যা য় তাহারও হিসাব মিলিবে বর্তমান তালিকার অবদ্ধ এবং বন্ধনীবদ্ধ সংখ্যার সংক্তে। কেননা, পূর্বসংকলিত স্ফ্রীপত্রের প্রয়োজনীয় সব সংখ্যাই এই স্ফ্রীপত্রে দেখানো হইবে বন্ধনীর মধ্যে। প্রসন্ধক্রমে বলা আবশুক, এই পূর্ব-বৈকালীতে ('প্রবাসী'-পাণ্ড্লিপিতে) রচনার স্থান কাল কোথাও লেখা নাই; তাহা অক্ত স্তত্তে, বিশেষতঃ আধার-পাণ্ড্লিপি দেখিয়া, পরে জানা যাইবে অথবা অনুমান করাও অসন্তব হইবে না।—

॥ ২ ॥ পূর্ব-বৈকালী বা 'প্রবাসী' পাণ্ডুলিপি । রচনা : মাঘ ১৩৩২ - বৈশাখ ১৩৩৩ অংশতঃ প্রবাসী পত্রে মুদ্রণ : বৈশাখ-কার্ত্তিক ১৩৩৩

সংখ্যা হচনা বিশেষ শিরোনাম সামরিক পত্তে প্রকাশ। পৃষ্ঠাহ ১। দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা। দোল-পূর্ণিমায়। সবৃদ্ধ পত্ত। চৈত্র ১৩৩২। ৫৭০

२। काश्चरनत नवीन ष्यानरम । जर्पन । अत्क পত্ত । रेठ्य ১००२। ११১

৩। অনস্তের বাণী তুমি

[বসস্তের দৃতী তুমি। নববধৃ। ভারতী। চৈত্র ১৩৩২। ৪৬৭ । গান। রবি।^{১১} চৈত্র [১৩৩২] ৩৮০

স্বীকার করিয়াছেন।

রবীন্দ্রলেথার্কনে আলোচ্য বৈকালীর আখ্যাপত্রে তারিথ আছে '১লা অগ্রহায়ণ' বা ১৭ নভেম্বর ১৯২৬। মনে করা যাইতে পারে, ঐ সময়ের মধ্যে এই বৈকালীর উদ্দেশে ধাতব পত্রে 'দিনাবসান' কবিতা অবধি লেখা হয় এবং উহাই সংকলনের শেষ রচনা কল্পনা করায় কবি উহার শেষে স্বাক্ষরও করেন। পরে আরও বে-চুটি গান লিখিয়া দেন তাহার তারিথ যথাক্রমে ২১ ও ২৪। আরও পরের গান হয়তো ধাতুপত্রে লেখার সময় বা স্বযোগ হয় নাই কিন্তু বর্তমান গ্রন্থে সংকলিত।

১১ 'রবি' ত্রিপুরা রাজ্যের ত্রৈমাসিক পত্র, এ ক্ষেত্রে ত্রিপুরান্ধ ১৩৩৫। রবি পত্তে ও ভারতী'তে পাঠভেদ অল্পই কিন্তু রচনাকালের নির্দেশ পৃথকৃ—

> ভারতী: ২১শে ফান্ধন ১৩৩২ রবি: ১৮ই ফান্ধন ১৩৩২

রবীক্রনাথ আগরতলায় সম্মানিত রাজ-অতিথি-রূপে ছিলেন ১৩৩২ ফাল্কনের ১০-১৪

	_	
	তোমার বীণা আমার মনোমাঝে	
¢	চপল তব নবীন আঁখি ছটি∗	প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩৩
	[ভোরের পাথি নবীন আঁথি	ছ্টি। মুক্তি। মহুয়া : ১৩৩৬] ৪০৩
७	নৃপুর বেজে যায়*	প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩৩। ৪০৪
9 1	লিখন তোমার ধ্লায় হয়েছে*	প্রবাসী। ভাব্র ১৩৩৩। ৭১৫
6 1	জানি তোমার অজানা নাহি গো*	প্রবাসী। স্বাঘাঢ় ১৩৩৩
	[অজানা জীবন বাহিসু। উদ	্ঘাত। মহয়া : ১৩৩৬] ৪০৪
9	की फूल वातिल*	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৭
۱ • د	আমার লতার প্রথম মৃকুল∗	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬
22	কেন রে এতই যাবার ত্বরা*	প্রবাসী। ভাত্র ১৩৩৩। ৭১৭
३२ ।	কাঁদার সময় অল্ল ওরে*	প্রবাসী। ভাক্র ১৩৩৩। ৭১৬
201	বিনা সাজে সাজি*	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬
78	কী পাই নি তারি*	প্রবাসী। ভাত্র ১৩৩৩। ৭১৬
>01	সেই ভালো সেই ভালো*	প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৬
361	অনেক কথা যাও যে ব'লে*	প্রবাসী। ভাব্র ১৩৩৩। ৭১৫
391	দে পড়ে দে আমায় তোরা*	প্রবাসী। ভাদ্র ১৩৩৩। ৭১৬
141	পাতার ভেলা ভাষাই নীরে*	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৫
166	এবার এল সময় রে তোর*	প্রবাসী। ভাক্ত ১৩৩৩। ৭১৭
[৩৭]	ওগো জলের রাণী। জলের রাণী।	ভারতী। কার্তিক-অগ্র. ১৩৩২। ২১১
	প্রবাদী	। কষ্টিপাধর : ফাব্ধন ১৩৩২। ৬৮১
२० ।	শেষ বেলাকার শেষের গানে*	প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৫
२५।	আধেক ঘুমে নয়ন চুমে*	প্রবাসী। ভাব্র ১৩৩৩। ৭১৭
२२ ।	এ পথে আমি যে*	<u>क्य</u> वामी । स्थावन ১००० । <i>१६</i> १
२७ ।	দিন পরে যায় দিন*	প্রবাসী। আশ্বিন ১৩৩৩। ৮৫৯

তারিথে ইহা পূর্বোক্ত ত্রৈমাসিক পত্রে (পৃ ৪৫৯-৪৬৩) জানা যায় : '১০ই ফাল্কন, রাত্রি প্রায় দশ ঘটিকার সময় বিশ্বকবি রবীক্রনাথ কুঞ্জবনপ্রাসাদে পদার্পণ করেন। । । । রাসলীলা দেখিয়া কবি বড়ই মৃগ্ধ হন। । । তার পর দিন (১৪ই ফাল্কন) দ্বিপ্রহরে কবি রবীক্রনাথ কুঞ্জবন ত্যাগ করিয়া কলিকাতা অভিমূথে যাত্রা করিলেন।' এই কয়দিনে রবীক্রনাথ কোন্ গান রচনা করেন, পরবর্তী যোড়শ পাদ্টীকায় আলোচনা করা হইবে।

২৪। তপস্থিনী হে ধরণী*

২৫। বিরস দিন, বিরল কাজ*

(প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩

(বিবশ দিন, বিরস কাজ। বিজয়ী। মহুয়া: ১৩৩৬) ১২ ৫৫৬

(৩৪) বনে যদি ফুটল কুস্থম*

(৩৫) এসো আমার ঘরে*

(প্রবাসী। আস্থিন ১৩৩৩। ৮৫৯

(প্রসা আমার ঘরে*

(প্রসামান ব্যরস্কার বিস্কার বিস্কার বিরস্কার বিস্কারণ প্রসামার বিরস্কার বিস্কার বিস্ক

[আঁধারের লীলা আলোর রঙ্গ বিরক্ষে। রবীন্দ্রপাণ্ড্রলিপি ২৭] ১৩ ['৩২'] নিশীথে কী কয়ে গেল* প্রবাসী। আধিন ১৩৩৩। ৮৬০ [২৮] আমার প্রাণে গভীর গোপন* প্রবাসী। শ্রাবণ ১৩৩৩। ৫৫৬

১২ বর্তমান তালিকার '[৩৭]' বাদ দিয়া একাদিক্রমে ২৫টি গান কবি উদ্ভব-বৈকালীর প্রথমাংশের জন্য লিখিয়া দেন, এ অন্থমান সংগত; প্রচারিত বৈকালী খণ্ডিত হওয়াতেই '২৬' সংখ্যা হইতে আমাদের দৃষ্টিগোচর। [৩৭] সংখ্যার গানটি স্থানবদল করিয়া পরে গিয়াছে, এক পৃষ্ঠাতেও আবদ্ধ থাকে নাই (পূর্ব-বৈকালীতে এক-পৃষ্ঠা-পরিমিত)। উদ্ভব-বৈকালীর স্থচনার ২৪ পাতা বা ২৮ পৃষ্ঠা হারাইয়াছে; এই পৃষ্ঠার হিসাবও ঠিক মিলিবে যদি মনে রাখা যায় 'তোমার বীণা' (৪) গানে ২ পৃষ্ঠা এবং 'চপল তব নবীন আঁখি' (৫) গানে ৩ পৃষ্ঠাই লাগিবার কথা। ('প্রবাদী'-পাণ্ডুলিপিতে শেষোক্ত রচনা ঠাস-ভাবে লেখায় ২ পৃষ্ঠা হইয়াছে।)

পূর্ব ও উত্তর উভন্ন বৈকালীর 'যৌথ সম্পদ' স্বদেশে লেখা গান ও কবিতা। সে হিসাবে উত্তর-বৈকালীর ষে-হুটি গান পূর্ব-বৈকালীতে প্রত্যাশিত অথচ নাই, প্রথম স্ফীপত্রে তাহাদের সংখ্যা— '৩৬' ও '৩৮'। দ্বিতীয় স্ফীপত্রে উহাদের স্থান শৃত্য।

- ৩২টি গান প্রবাসী পত্রে (আষাঢ়-কার্ভিক ১৩৩৩) 'বৈকালী' পর্যায়ে মুদ্রিত।
 অধিকন্ত ইহার ৩টি গান 'কষ্টিপাথর' অংশে শাস্তিনিকেতন পত্র হইতে (নববর্ষ:
 বৈশাখ ১৩৩৩) পূর্বেই সংকলিত (জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩)।
- পত শংখ্যায় চিহ্নিত করিয়া কোন্টির নির্দেশ হইতে পারে বলা ষায় না। অর্থাৎ,
 উত্তর-বৈকালীর নষ্ট ছই পাতায় বা চার পৃষ্ঠায় ২৮-৩০ -সংখ্যক তিনটি গান সম্পর্কে
 অন্ত্যানের ভাষ্যতা থাকিলেও, তাহার বাহিরে আর-একটি সম্পর্কে সংশয়
 থাকিয়াই যায়। এইব্য প্রথম স্ফীপত্রে সংখ্যা '২৮' '? ৩১' এবং ষষ্ঠ পাদ্টীকার
 প্রথম অন্ত্রেছে
 ।
- ১৩ শ্রীমতী লীলা মন্ত্র্মদারের স্বাক্ষরসংগ্রহের থাতায় ৪ ছত্ত্রে প্রথম রচনা ৫ চৈত্র ১৩৩২ তারিখে। সেইটি গান ও কবিতার বীক্ষরপ। সেই দিনে অথবা ত্ব-এক

[২৯] হার মানালে ভাঙিলে অভিমান* প্রবাসী। আশ্বিন ১৩৩৩। ৮৬• कानि कन्म। खावन ১७७७। २८८ প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ১ [৩•] বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে* । নববৰ্ষ। শান্তিনিকেতন। বৈশাখ ১৩৩০। ৭০ প্রবাসী। কষ্টিপাথর : শ্রাবণ ১৩৩০। ৬২১ ['৩৩'] পথে যেতে ডেকেছিলে* প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ১ ['২৬'] আপনারে দিয়ে রচিলি রে* প্রবাদী। কাতিক ১৩৩৩। ১ । নববৰ্ষ। শাস্তিনিকেতন। বৈশাখ ১৩৩৩। ৬৯ প্রবাসী। কষ্টিপাথর: শ্রাবণ ১৩৩৩। ৬২১ প্রবাসী। আষাঢ় ১৩৩э। ৪০৪ ['২৭'] তুমি কি এসেছ মোর দারে* । नववर्ष । भास्त्रिनित्कजन। देवभाव २०००। १० [?] হে চিরন্তন। নববর্ষ। শাস্তিনিকেতন। বৈশাথ ১৩০৩। ৬৯ প্রবাসী। কষ্টিপাথর : শ্রাবণ ১৩৩৩। ৬২১ প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ২ [?] মরণসাগরপারে* (লিপিচিত্র) উত্তরা। কার্তিক ১৩৩৪। ৯৩ পরবাসী চলে এসো ঘরে। প্রবাসী। প্রবাসী। বৈশাথ ১৩৩৩। ১

> এসো এসো প্রাণের উৎসবে ইত্যাদি একটি স্বাক্ষর-কবিতা : কোথা যাবে সে কি জানা নেই ইত্যাদি]

[৬১] বাঁশি যথন থামবে ঘরে। জন্মোংসবের দিনে। প্রবাসী। জৈ্যষ্ঠ ১৩৩৩। ৩৭৬। কবির কামনা। কল্লোল। জ্যৈষ্ঠ ১৩৩৩। ৭৫

িপরিণামে তুইটি গান: পরবাসী চলে এসো ঘরে ইত্যাদি

জন্মোৎসবে প্রচারিত লিপিচিত্র: ২৫ বৈশাথ ১৩৩৩/শাস্তিনিকেতন

[৩৯] হে মহাজীবন, হে মহামরণ* প্রবাসী। কার্তিক ১৩৩৩। ২

দিনের মধ্যে (১২ চৈত্রের পরে নয়) যে গীতিকবিতায় উহার পরিণতি, আধার-পাণ্ডলিপিতে (রবীন্দ্রপাণ্ডলিপি ২৭) তাহা বিচিত্র রেথাজালে ও মদীবিলেপনে অবল্পুপ্রায়। অথচ দেশে থাকিতেই একটি 'গ্রাহ্মপার্চ' লেখা হয় তাহার দাক্ষ্য 'প্রবাদী'-পাণ্ডলিপিতে। বিদেশে উহার আর-এক রূপের উদ্ভব আধার-পাণ্ডলিপিতেই, তাহা পরবর্তী তৃতীয় স্ফটীপত্রে পাণ্ডলিপি-পরিগণিত '৪৭' সংখ্যায় ও ২৩-সংখ্যক পাদটীকায় দেখা যাইবে। গীতবিতানে প্রচল গান -রূপে য়াহার সংকলন তাহা আরও পরে (ভাক্র ১৩৩৫) দেখা দেয় ১২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপিতে মহয়া কাব্যের পরিকল্পনা-কালে।

পারম্পর্য হবছ একরপ না হইলেও নির্দিষ্ট কাল-সীমার মধ্যে স্বদেশে লেখা একই গান-কবিতার গুচ্ছ পূর্বোত্তর উভন্ন বৈকালীতে থাকিবার কথা। কিন্তু যে-কোনো কারণে হউক, সে প্রত্যাশার সর্বথা পূরণ হন্ন না। কেননা—

১ নষ্ট পাতার সংখ্যার সহিত রচনার সংখ্যা মিলাইয়া মনে হয়, পূর্ব-বৈকালীর স্থদীর্ঘ কবিতা 'পরবাসী চলে এসো ঘরে' (বর্তমান সংকলনে ক্রমিক সংখ্যা ৩৯) উত্তর-বৈকালী'তে দেওয়া হয় নাই এবং আমাদের অন্থমানে বর্তমান সংকলনের '৩১' '৩২' '৩৩' (প্রথম তথা দ্বিতীয় স্থচীপত্রের ২৮, ২৯, ৩০) দেওয়া ইইলেও, নটীর পূদ্ধার গীতিগুচ্ছের আন্থয়কে—

আর রেখো না আঁধারে (পূর্ব-বৈকালীতে নাই)
আঁধারের লীলা
হে চির ন্তন
মরণসাগরপারে

(দ্বিতীয় স্ফটীপত্রে ?-চিহ্নিত)

উল্লিখিত চারিটি গানের ঠিক কোন্টি দংকলন করায় উত্তর-বৈকালীতে ৩১ সংখ্যা পূর্ণ হইয়াছিল, তাহাও জানা নাই। একাধিক গানের স্থান ছিল না। '? ৩১' দংখ্যা দিয়া প্রথমটির স্থান দেওয়া হইয়াছে প্রথম স্কচীপত্তে।

- ২ উত্তর-বৈকালীতে থাকিলেও, 'আপনহারা মাতোয়ারা'ও 'আজি এই মম সকল ব্যাকুল' গীতিকবিতা-ফুটি (বর্তমান সংকলনের '৪২'ও '৪৩' কিন্তু উত্তর-বৈকালীতে' '৩৬'ও '৩৮' সংখ্যা) পূর্ব-বৈকালীতে দেওয়া হয় নাই; এজক্সই সংকলিত বিতীয় স্ফীপত্রে পাওয়া যাইবে না।
- ত বাংলা ১৩৩২ সনের মাঘ শেষ না হইতে 'ওগে। জলের রানী' (সংকলিত উভয় স্চীপত্রেই সংখ্যা '৩৭' এবং বর্তমান সংকলনে '২০') লেখা হয় এরূপ অন্ত্মানের কারণ আছে; উহার পুরোগামী গীতিকবিতা না ধরিলেও, রবীক্রনাথের পুরাতন খদড়া-পাগুলিপিতে দেখা বায় উহার পরে, এমন-কি, পূর্বোত্তর বৈকালীতে সংকলিত আরও হুটি গানের পরে লেখা হয়—

দে যে মনের মাত্র্য কেন তারে ইত্যাদি।

এই গান এবং হ য় তো ইতঃপূর্বে উল্লিখিত 'আর রেখো না আঁধারে আমায়' নটার পূজা'র এই গানটি কোনো বৈকালীতে সংকলন করা হয় নাই। একমাত্র অনবধানই ইহার কারণ হইতে পারে।

শ্রীমতী রমা মজুমদার (কর) -সংগৃহীত রবীন্দ্রনাথের যে পুরাতন থসড়া-

পাঙ্লিপির উল্লেখ এইমাত্র করা হইল, তাহাতে বৈকালীর যে করটি গান পর-পর পাওয়া যায় তাহার এক তালিকা এথানেই দেওয়া চলে—

	मःशाः	বকালী	পূৰ্ব-বৈকালী	ৰৰ্তমান
>	ওগো জলের রানী	৩৭	09	₹•
ર	আপনহারা মাতোয়ারা	৩৬	×	82
৩	এসো আমার ঘরে	૭ ૯	٥¢	२৮
8	সে যে মনের মাহুষ কেন তারে	×	×	×
œ	বনে যদি ফুটল কুস্থম	৩৪	७ 8	२१

সমৃদয় বৈকালীর আধার-স্বরূপ যে রবীন্দ্রপাণ্ডুলিপির (অভিজ্ঞান-সংখ্যা ২৭) প্রাসন্ধিক স্চীপত্র পরে দেওয়া ঘাইতেছে তাহাতে দেখা ঘাইবে, উল্লিখিত গীতপঞ্চকের চতুর্থ বাদ দিয়া চারিটি আছে বিপরীত পারম্পর্যে; এ কারণে এবং তেমন কোনো কাটাকুটি নাই বলিয়াও মনে হয়, সম্ভবতঃ 'কর-পাণ্ডুলিপি' হইতেই নকল করা হইয়ছে (অনবধানে একটি বাদ পড়িয়াছে ?)— ২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাণ্ডুলিপিই উহাদের মূলাধার বা থসড়া-খাতা হইতে পারে না।

২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাঞ্লিপি পূর্ব উত্তর এবং বর্তমান সকল বৈকালীর আধারপাঞ্লিপি-স্বরূপ এবং অধিকাংশ রচনার থসড়া-থাতাও বটে। সেই পাঞ্লিপিতে
মধ্যে-মধ্যে রচনার তারিথ ষেমন দেওয়া আছে, ১৪ কবিতা-গানের পারম্পর্য হইতেও
রচনাকাল সম্পর্কে স্বস্পষ্ট ধারণা করা যায় (কেবল স্থচীপত্র-মৃত '২'—'৫'এর পারম্পর্য
উন্টাইয়া লওয়া দরকার কর-পাঞ্লিপির সাক্ষ্য-অত্যবায়ী); তাহা ছাড়া অন্তান্ত
সংক্রে অনেক রচনার স্থনিদিষ্ট তারিথ জানা যায়— এ বিষয়ে বিশেষ আলোকপাত হয়
শ্রীঅনাদিক্মার দন্তিদারের সমকালীন থাতাপত্রে। রবীন্দ্রনাথ নৃতন গান রচনা করিয়াই
তাঁহার 'সকল গানের ভাগুারী' দিনেক্রনাথকে অথবা সমীপন্থ অন্ত কোনো গায়কগুণীকে ডাক দিতেন ওই গান কণ্ঠে ধারণ করিতে; এজন্ত তাঁহাদের সংগৃহীত
রবীন্দ্রপাঞ্লিপিতে বা থাতা-পত্রে যে তারিথ বা যে সময় জানা যায়, সচরাচর তাহা
অন্তান্ত হইতে দেখা গিয়াছে। শ্রুকেয় অনাদিক্মার দন্তিদারের নিকট যে-যে তারিথ
জানা গিয়াছে, পরবর্তী স্থচীপত্রে তাঁহার নামোল্লেখে বন্ধনী-মধ্যে সেগুলি সংকলন করা
হইবে।—

১৪ পরবর্তী স্থচীপত্রে যে তারিথের অন্য কোনো স্থ্র দেওয়া নাই তাহা সব সময়েই পাণ্ডলিপি ২৭ -ধৃত। স্থচীপত্রের প্রথম সারিতে পাণ্ডলিপির মৃ দ্রি ত পৃষ্ঠাঙ্কের উল্লেখ। পরে পাণ্ডলিপি-গত পারম্পর্যের গণনা কেবল বৈকালী লইয়া। প্রত্যেক ক্ষেত্রে উদ্ধৃত স্থচনাংশের পাঠ ও বানান পাণ্ডলিপি-সম্মত।

30

॥ ৩॥ রবীন্দ্রপাণ্ড্লিপি ২৭১৭ বর্তমান বৈকালী প্রসঙ্গে গান ও কবিতার সামগ্রিক স্ফুটীপত্র

পার্	লিপি-	- ধৃত	ৰৰ্তমান গ্ৰন্থে
পৃষ্ঠা	পার	পর্য ক্ষনা রচনা র	ক্ৰমিক সংখ্যা
1	>	পরবাসী চলে এসো ঘরে শেষ ২ গুবকের পূর্বে: ২২ মাঘ ১৩৩২	৫৩
4	ર	বনে বদি ফুটল কুম্বম (৪)১৬ উত্তর-বৈকালী: ফান্ধন ১৩৩২	२१
5	৩	এসো আমার ঘরে (৩) তদেব: ফাল্কন ১৩৩২	२৮
6	8	আপনহারা মাতোয়ারা (২) তদেব: ফাল্কন ১৩৩২	8२
7	¢	প্রগো জলের রাণী (১)১৬ তদেব: ফান্ধন [?] /১৩৩২	२ •
8	৬	দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা ১১ ফাল্পন [১৩৩২]	>
10	٩	ফাগুনের নবীন আনন্দে ১৫ ফাল্কন ১৩৩২	ર
17	ь	অনস্তের বাণী তুমি [বসস্তের দূতী তুমি] রবি/ভারতী: ১৮/২১ ফাছ	, ন '৩২ ৩

১৫ শান্তিনিকেতনে রবীক্রদদন-সংগ্রহের এই পাণ্ডুলিপি মূলতঃ ১৯২৬ খৃন্টাব্দের এক ভায়ারি; এক-এক তারিথে এক-এক পৃষ্ঠা। রচনার খদড়া-খাতা বলিয়া (ব্যতিক্রম দন্তবক্তঃ স্থচনার ৫।৬টি গীতিকবিতা, বিশেষতঃ দংখা '২'-'৫' / পৃষ্ঠা '4'-'7') কেবল বৈকালীর গান-কবিতা নয়, অক্ত কবিতা, বিশেষতঃ লেখন-উদ্দিষ্ট বছ কবিতিকা (লেখন-বহির্ভূত ও ফুলিঙ্গ-ধৃত কয়েকটি) ইহাতে স্থান লইয়াছে। রচনারিক্ত বা রচনা থাকিলেও মসীবিলেপনে লুপ্তপ্রায় বা প্রচ্ছয় এরপ পৃষ্ঠা ষেমন আছে, ছি ডিয়া ফেলা হইয়াছে এমন পাতার সংখ্যাও নিভাস্ত অল্প নয়। বৈকালী শেষ হওয়ার সঙ্গে পৃষ্ঠা '201', অথবা বর্তমান সংকলন-ধৃত আরও ২টি গান ধরিলে পৃষ্ঠা '203'— বৈকালীর সীমা), অর্থাৎ ১৯২৬ সনের শেষে দেশে ফিরিয়া, কবি 'নটীর পূজা'র নবরূপায়ণে মনোনিবেশ করেন; তাহারও পরে 'নটরাজ' নৃত্যামীতাভিনয়ের কল্পনা কবির মনে আসে— এই পাণ্ডুলিপির বৈকালী-উত্তর অংশে তাহারও সাক্ষা আছে।

১৬-১৬ স্থচনার পরে পরে বন্ধনীবন্ধ সংখ্যা দিয়া যথার্থ পারস্পর্যের নির্দেশ কর-পাণ্ড্লিপি -অন্থসারে। পরবর্তী রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপির তালিকায় কর-পাণ্ড্লিপির উল্লেখ প্রথমেই আছে। অস্তত এই গীতচতুষ্টয় সম্পর্কে উহাকেই পূর্বতন আধার-পাণ্ড্লিপি বলিতে হয়। ২৭-সংখ্যক রবীন্দ্রপাণ্ড্লিপিতে নকল করিবার কালে বিক্তানের বিপর্যয় হইয়াছে, অর্থাৎ কালক্রমের বৈপরীত্য; নকল বলিয়াই কাটাকুটি

18	3	তোমার বীণা স্বামার মনোমাঝে [নির্মলকুমারী : চৈত্র ১৩৩২]১৭	8
19	۶۰	['ঝাঁধারের লীলা' গীতিকবিতার মসীবিলিগু ও তিরম্বত পূর্বপাঠ	
		(८७०८ हार्च ५७७२]	२३
20	>>	চপল তব নবীন আঁথি স্তবক ১-২ -উত্তর : ১২ চৈত্র ১৩৩২	¢
22	১২	নৃপুর বেজে যায়	৬
23	১৩	निथन ८ जामात्र ध्नात्र रुरत्रष्ट् ध्नि	٩
24	>8	জানি তোমার অজানা [অনাদি : ১৬ চৈত্র ১৩৩২]	ь
27	>¢	কি ফুল ঝরিল বিপুল [অনাদি : ১৭ চৈত্র ১৩৩২]	٥
28	১৬	আমার লতার প্রথম মুকুল [অনাদি ১৭ চৈত্র ১৩৩২]	٥.
29	۱۹	কেন রে এতই যাবার স্বরা [স্থনাদি : সকাল ১৮ চৈত্র ১৩৩২]	>>
30	74	কাঁদার সময় অল্প ওরে [অনাদি : সকাল ১৮ চৈত্র ১৩৩২]	১২
31	75	বিনা সাজে সাজি [অনাদি : সকাল ১৯ চৈত্ৰ ১৩৩২]	১৩
33	२०	কি পাই নি তারি [অনাদি : তুপুর ১৯ চৈত্র ১৩৩২]	38

নাই বলিলে চলে। এখন দেখিতে হইবে— আলোচ্য গীতচতুইয়ের যে গান 'প্রগোজনের রানী' কর-পাণ্ডলিপি অন্থদারে অগ্রগণ্য, ফাল্কনে তাহা লেখা হয় কি না সন্দেহ। সংকলিত বিতীয় স্ফীপত্রে '১৯' ও '২০'র অন্তর্বর্তী [৩৭] সংখ্যায় দেখা যাইবে ভারতীতে ১০৩২ সনের কার্তিক-অগ্রহায়ণে ইহার প্রথম প্রকাশ এবং প্রবাসী পত্রের 'কষ্টিপাথর' অংশে পরবর্তী ফাল্কনেই সংকলন। গানটি ফাল্কনে লেখা ও ছাপা হইলে, ফাল্কনের প্রবাসীতে তাহার সংকলন আশা করা যায় না। প্রচলিড গীতবিতান-৩ - সম্পারে, কবির 'দালিয়া' ছোটো গল্পের আখ্যান লইয়া যে নাটক রচনার সংকল ছল, ইহা তাহারই প্রস্তাবনা-গীত।

অবশিষ্ট তিনটি গানের সহিত পরের ছটি গান যোগ করিয়া একটি শুচ্ছ বাঁথিলে দেখা যায়, 'রবীন্দ্রনাথ ও ত্রিপুরা' (আদিন ১৩৯৮) গ্রন্থ-অন্থুসারে সব-ক'টি গান (২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপিতে পৃষ্ঠাক্ষ বথাক্রমে 6, 5, 4, 8 এবং 10) ত্রিপুরায় বা আগরতলায় লেখা। 'রবি' তৈমাসিক অন্থুযায়ী (একাদশ পাদটীকা স্রষ্টব্য) আগরতলায় কবির এই স্থিতিকাল ১০-১৪ ফান্ধুন ১৩৩২। এই শুচ্ছের শেষ গানের তারিখটি বিশেষ উপলক্ষ্যের ছোতক, র চ না র নয় তাহা জানা যাইবে পরবর্তী রবীন্দ্র-পাণ্ডলিপির বিবরণে (সংখ্যা ২)। বর্তমান গ্রন্থের '৯৯' পৃষ্ঠা স্রষ্টব্য।

১৭ স্ত্রন্থ্য শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ -প্রণীত : বাইশে শ্রাবণ (১৩৭৩), পৃ ৩৪-৩৭

34	२ऽ	নেই ভালো সেই ভালো	•••	•••	: t
37	२२	অনেক কথা যাও যে বলে [অনাদি :	२১ हिन्न १७७२]		১৬
38	२७	দে পড়ে দে আমায় তোরা	•••	•••	>1
39	२8	পাতার ভেলা ভাসাই নীরে	•••	•••	74
40	ર¢	এবার এল সময় রে তোর [অনাদি :	: সকাল ২৩ চৈত্ৰ ১৩	૭૨]	79
43	२७	শেষ বেলাকার শেষের গানে [অনাটি	हे : २० हिन्द ५७७२]		52
44	२१	আধেক ঘুমে নয়ন চুমে	•••	•••	२२
4 5	२৮	এ পথে আমি যে	•••	•••	২৩
47	45	আমার প্রাণে গভীর গোপন	•••	•••	৫১
4 8	٥.	হার মানালে ভাঙিলে অভিমান [অন	गिषः मकान २१ है	ব্র ১৩৩২]	৩২
49	৩১	किन भारत यात्र किन	•••	•••	₹8
51	৩২	বাঁধন ছেঁড়ার সাধন হবে	•••	•••	9 9
52	೨	षाभनातः मितः উত্তর-বৈকালী	: ১ বৈশাখ ১৩৩২		ા
53	ଓଷ	তুমি কি এসেছ মোর ঘারে তদে	ব : ১ বৈশাখ ১৩৩২		৩৬
54	ં	হে চিরন্তন	•••	•••	৩৭
55	৩৬	মরণদাগরপারে তোমরা অমর		•••	৩৮
56	৩৭	তপস্বিনী হে ধরণী	•••	•••	२৫
56	৬৮	वित्रम मिन, वित्रल कांक	•••	•••	२७
59	೯೮	নিশীথে কি কয়ে গেল মনে উ	ভর-বৈকালী : ৭ বৈ	ণাখ ১৩৩৩	৩৽
61	8 •	আর রেখো না আঁধারে ^{১৮}			
62	82	আজি এই মম সকল ব্যাকুল	উত্তর-বৈকালী : বৈ	শাধ ১৩৩৩	84
65	(62	2) ৪২ আমায় ক্ষম হে ক্ষম ^{১৯}	,		
67	80	পথে ধেতে ডেকেছিলে উত্তর-বৈ	বৈকালী : ৮ বৈশাখ :	,৩৩ ৩	98

১৮ 'নটার পূজা' গীতিগুচ্ছের অন্ততমরূপে বৈকালীতে সংকলন প্রত্যাশিত। অথচ পূর্ব-বৈকালীতে নাই, উত্তর-বৈকালীতে ছিল কি না নিশ্চিত বলা যায় না।

১৯ নটার পূজা'র বহুখ্যাত গান। 'ভায়ারি' হইতে এক পাতা ছি ডিয়া ফেলায় উহার পূর্বপাঠের (ষেটি উত্তর-বৈকালীতে সংকলিত / বর্তমান সংকলনে '৪৩') মূখান্ম্থি আসিয়া গিয়াছে এবং শেষ তথকও লেখা হইয়াছে '62' পৃষ্ঠার নিমভাগে। এই উত্তর পাঠ নাট্যগরিমায় বহুপ্রচারিত ও আদৃত হওয়াতেই বোধ করি শৃত্য কাব্যে সংকলনের ইচ্ছা কবির ছিল না। কিন্তু পূর্বপাঠ সম্পর্কে সে কথা বলা

68	88	হে মহাজীবন, হে মহামরণ ^২ °	•••	88
69	8 €	বাঁশি যথন থামবে ঘরে ^{২১} 🕳	২৫ বৈশাখ ১৩৩৩	8•
83	86	আশ্রমের হে বালিকা ^{২২}	८००८] ब्राक्ट ०८	85
143	89	শাঁথারের লীলা আলোর রঙ্গে বিরু	₹ ^{₹৩}	. ২৯

চলে না; এজন্মই পূর্ব-বৈকালীতে না দিলেও উত্তর-বৈকালীতে কবি এটি শ্বরণ করিয়াছেন—ঈবৎপরিবর্তিত পাঠ পরে (আখিন ১৩৩৬) মহন্না'র অলীভূত।

- ২০ নটার পূজা'র গান এই পাণ্ডলিপিতে এখানে শেষ হয়। কবির জন্মোৎসব-অমুষ্ঠানে,
 শাস্তিনিকেতন আশ্রমে, ২৫ বৈশাধ ১৩৩৩ তারিথের সদ্ধ্যায় ইহার প্রথম অভিনয়।
 শ্রীমতীর ভূমিকায় শ্রীমতী গৌরীদেবী (বহু)। কবি-কর্তৃক ইহার রচনা ও
 নাট্যপ্রস্তুতি সম্পর্কে নানা কথা রবীক্রজীবনীতে ও অক্যত্র জানা যায়। শ্রীমতী
 নির্মলকুমারী মহলানবিশ বলেন (কবির সঙ্গে যুরোপে / ১৩৭৬ / পু ৫): 'দেখতে
 দেখতে তিন দিনের মধ্যে 'নটার পূজা' খাড়া হয়ে উঠল ।… তিন দিনের দিন পড়া
 শেষ হলে… রিহার্সেলের পালা। পাঁচিশে বৈশাখ সন্ধ্যেবেলা 'কোণার্ক' বাড়ীটার
 চাতালে…' প্রথম অভিনয়, কবির জন্মোৎসব উপলক্ষে। / অকুমান হয়, নাটকে
 প্রযুক্ত কতকগুলি গান হয়তো অস্তরের অক্যবিধ প্রেরণায় আগেই লেখা
 হয়; ১৩৩৩ বৈশাথের শাস্তিনিকেতন পত্রে 'নববর্ষ' শিরোনামে যে কয়টি গান
 প্রকাশিত তম্মধ্যে রহিয়াছে 'বাঁধন হেঁড়ার সাধন হবে' ও 'তুমি কি এসেছ
 মোর ঘারে' (বর্তমান সংকলনে '৩৩' ও '৩৬')।
- ২১ বৈকালী-ধৃত স্বদেশে লেগা গান-কবিতার পর্যায় শেষ হয় এই 'দিনাবসান' কবিতার ৫ অবকে। তয়৻ধ্য তৃতীয় অবক কাটিয়া দেন কবি আলোচ্য পাঞ্লিপিতে, এরপ দেখা য়য়। 'প্রবাদী' পাঞ্লিপিতে (পূর্ব-বৈকালী) ত্যাগ করেন শেষ অবক। আর, পরিশেষ কাব্যে (সম্ভবতঃ উত্তর-বৈকালীতেও) চতুর্থ অবক বন্ধিত। বৈকালীর বর্তমান সংস্করণে স্ব-ক'টি শুবক মুখোচিত পারম্পর্যে সংক্লিত।
- ২২ রচনা 'রোহিত সাগর' পার হওয়ার কালে ইহা জানা যায় বৈকালীর লেথাঙ্গনে। আলোচ্য পাঙ্লিপির পাঠে 'মাঘের বিদায়ক্ষণে' ইত্যাদি ৬ ছত্র মূল কবিতায় পরে অম্প্রবিষ্ট; তাহার স্থান, অবিকল যেমন দেখা যায় পরিশেষ কাব্যে; শেষ পৃষ্ঠায় 'স্থা হও [করো]… রচি লহ নৈবেছের মালা।' এই ৬ ছত্র তারিথ লেখার পরে সংযোজিত, হয়তো বা ঐ দিনেই রচিত।
- ২৩ পুরাতন রচনার নৃতন পাঠ সন্দেহ নাই। বর্তমান স্ফীপত্রে '19' পৃষ্ঠায় ইহার পুর্বহান নির্ধারিত। এ সম্পর্কে পুরোগামী ত্রয়োদশ পাষ্টীকা স্তইব্য। পাণ্ডুলিপিডে

```
তদেব : 'লাঞ্চিত' ইংরেজি রূপাস্তর : ১৭ জুলাই ১৯২৬ [ ১ শ্রাবণ ১৩৩৩ ]
145 81
         সে কোন পাগল<sup>২৪</sup> ৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২২ ভাস্ত ১৩৩৩]
151 86
152 ৪৯ কার চোথের চাওয়ার<sup>২৪</sup> ৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২৩ ভাব্র ১৩৩৩ ]
                                                                   86
         রয় যে কাঙাল<sup>২৪</sup> ১০ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [২৪ ভাদ্র ১৩৩৩ ]
153 c·
                                                                   89
154 ৫১ ছটির বাঁশি বাজল যে
                                ১৭ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ ি৩১ ভাব্র ১৩৩৩ ]
                                                                   86
157 ৫২ [ আকাশ, তোমায় কোন ] ২৫ বস্তমতী : তদেব [ ৩১ ভাব্র ১৩৩৩ ]
158 ৫০ তোর ভিতরে জাগিয়া বস্থমতী: ১৮ সেপ্টেম্বর '২৬ [১ আম্বিন '৩০] ৫০
161 ৫৪ নাই নাই ভয় ১৮ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [১ আশ্বিন ১৯৩৩]
                                                                   6 2
                               ১৯ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ ি ব আশ্বিন ১৩৩৩ ী
163 ৫৫ আমার মুক্তি
                                                                   @ 2
165 ৫৬ সকাল বেলার আলোয় ২০ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ ি আখিন ১৩৩৩ ব
                                                                   69
167 ৫৭ ভালো লাগার শেষ যে [ মধুর, ভোমার শেষ যে ]
                               ২১ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৪ আশ্বিন ১৩৩৩]
                              ২৪ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৭ আশ্বিন ১৩৩৩ ]
168-69 ৫৮ চাহিয়া দেখো রসের
                                                                   e c
171 ৫৯ পুপে, ] তুমি উষার সোনার বিন্দু
                                         তদেব [৭ আশ্বিন ১৩৩৩ ]
                                                                   æ5
172 ৬০ আপন গানের টানে
                               ২৫ সেপ্টেম্বর ১৯২৬ [৮ আবিন ১৩৩৩ ]
175 ৬১ আপ্নি আমার কোন্থানে ৬ অক্টোবর ১৯২৬ [১৯ আশ্বিন ১৩২৩ ] ৫৮
177 ৬২ প্রগো স্থন্দর, একদা কি জানি ১১ অক্টোবর ১৯২৬ [২৪ আখিন '৩৩ ] ৫৯
179 ৬৩ কোথায় ফিরিস ১২ অক্টোবর ১৯২৬ [২৫ আখিন ১৩৩৩]
181 ৬৪ আকাশে তোর তেমনি ২০ অক্টোবর ১৯২৬ [৩ কার্তিক ১৩৩৩ ]
183 ৬৫ পথ এখনো শেষ হল না ২৭ অক্টোবর ১৯২৬ [১০ কার্তিক ১৩৩৩]
                                                                   ৬২
185 ৬৬ দিনের বেলায় বাঁশি ৩০ অক্টোবর ১৯২৬ [১৩ কার্তিক ১৩৩৩]
                                                                   60
187 ৬৭ পাস্থ পাথীর রিক্ত কুলায়<sup>২৬</sup> ১ নবেম্বর ১৯২৬ [২৩ কাতিক ১৩৩১] ৬৪
197 ৬৮ তব অমূর্ত্ত বাণী [ অরূপ, তোমার বাণী ]
                               ২১ নবেম্বর ১৯২৬ [৫ অগ্রহায়ণ ১৩৩৩ ]
```

পরবর্তী ভাষান্তর বা রূপান্তর (মধ্যে অন্ত লেখা নাই) আছন্ত বর্জনচিহ্নিত; সম্ভবত: সেই পাঠ অপ্রকাশিত: The frolic of light in the sky of darkness etc.

- ২৪ রচনার স্থান-কাল-সহ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের হাতে লেগা।
- ২৫ কাগজের অপর পিঠে মদীবিলেপন-হেতু স্থচনার কয় ছত্ত ত্বসাঠ্য।
- ২৬ ধুয়ায় ফিরিয়া আসার আগে এই গানের সর্বশেষ পদে একটি পাঠপ্রমাদ তথা

199 ৬৯ বাশি আমি বাজাই নি কি ২৪ নবেম্বর ১৯২৬ [৮ অগ্রহারণ ১৩৩০] ৬৬
201 ৭০ কত যত ক্ষতি যত ২৫ নবেম্বর ১৯২৬ [৯ অগ্রহারণ ১৩৩০] ৬৭
203 ৭১ যা পেয়েছি প্রথম দিনে তদেব [৯ অগ্রহারণ ১৩০০] ৬৮

পূর্ব-বৈকালীর গীতিকবিতাবলীর সাময়িক পত্তে প্রচার তালিকাবদ্ধ হইয়াছে দ্বিতীয় স্ফীপত্তে। অক্যান্ত গানের সাময়িক পত্তে প্রচার তৃতীয় স্ফীপত্তে নাই; পাণ্ডু.- পারম্পর্যের ও বর্তমান গ্রন্থের ক্রমিক সংখ্যা -সহ এখানে দেওয়া গেল—

রৰী স্রপাণ্ডলিপি ২৭		সামরিক	পত্তে প্রচার			ৰৰ্তমান গ্ৰন্থে
87-46	গীতাষ্টক	মাসিক	বস্থমতী।	বৈশাখ ১৭	૭ ૭ ৪, ઝૃર	-8 84-42
eb-eb, 60-83	গীতপঞ্চক	সবুজ পতা।	কাতিক-ছ	মগ্ৰহায়ণ ১	৩৩৩, পৃ	P9-95

				eo-ee,	e9-eb
৬২-৬৪	গান	উত্তরা।	মাঘ ১৩৩৩, পৃ ৩৭৫-৭৬		८७-७১
৬৫-৬৭	গান	উত্তরা।	ফা ন্ধন ১৩৩৩, পৃ ৪৩৭-৩৯		<u> </u>
৯৮-৬৯	গান	উত্তরা।	टेह्य ১७७७, পृ ४৯১-৯२		৬৫-৬ ৬
90	গান	উত্তরা।	टेब्रार्व ১७७८, পৃ ৬১৯		৬৭
95	গান	উত্তরা।	বৈশাখ ১৩৩৪, পৃ ৫৫১		৬৮

প্রাসঙ্গিক রবীক্র পাণ্ডুলিপি

বৈকালী-সম্পর্কিত রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপি কোথায় কী আছে, যত দ্র জানা যায়, তাহার কালক্রমিক তালিকা এথানে দেওয়া গেল—

- ১ রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপি। রমা কর -সংগ্রহ। শ্রীমতী রমা মজুমদার (কর) ও শ্রীস্থরেক্রনাথ করের বংশধরগণের সম্পত্তি। আলোকচিত্রে বে গানগুলি দেখা যার, বর্তমান সংকলনে সংখ্যা: ২০, ২৭, ২৮ ও ৪২।
- রবীন্দ্র-পাণ্ড্রিপি। শ্রীমতী রেবা মহলানবিশ (সরকার) ও শ্রীস্থশোভন সরকার
 -দংগ্রহ। কলিকাতা। বর্তমান সংকলনের প্রথম ও দ্বিতীয় গান, প্রত্যেকটির

মুদ্রণপ্রমাদ দীর্ঘকাল ধরিয়া চলিয়া আসিতেছে: ভালে / রবীক্রসদনের আলোচ্য পাণ্ডলিপি ও ১২৭-সংখ্যক রবীক্রপাণ্ডলিপি তথা মহলানবিশ-সংগ্রহের স্বতন্ত্র রবীক্রপাণ্ডলিপি এই সব-ক'টির অন্থুসারে উহা 'তালে', বৈকালীর লেখাঙ্কন মনোযোগ দিয়া দেখিলে অক্তরূপ নহে আর উত্তরা মাসিক পত্রেও ঐ পাঠই পাওয়া বার ১৩৩৩ ফাস্কনে।

তুইটি পাঠ, প্রত্যেকটি স্বাক্ষরিত এবং বিতীয় গানের উভয় পাঠই '১৫ ফান্কন ১০০২' এই তারিথ-যুক্ত। আহ্বদিক তথ্য না জানিলে এই তারিথ কিন্ত প্রমাদজনক।
শ্রীস্থশোভন সরকারের চিঠিতে (৮.৪.১৯৭৪) জানা যায়, শ্রীমতী রেবার সহিত ওই তারিখে (২৭ ফেব্রুয়ারি ১৯২৬/১৫ ফান্কন ১০০২ ফাল্কনপূর্ণিমা) তাঁহার বিবাহ হয় এবং ওই সময় রবীক্রনাথ 'বত দ্র মনে পড়ে, আগরতলায় ছিলেন। গান তু'টি পাঠিয়েছিলেন তাঁর আশীর্বাদ হিসাবে— বিবাহসভায় গান তুটি ছেপে অতিথিদের দেওয়া হয়েছিল।' অর্থাং, '১৫' তারিখটি রচনার দিন নয়, ১১ বা ১২ হইতে বোধ করি বাধা নাই। '১৬-১৬' সংখ্যার পাদটীকা স্রন্থতা। বাহুল্য হইলেও বলা থাক্, বে-কোনো গানের একটি পাঠের সহিত আর-এক পাঠের হবহু মিল নাই এবং গীতবিতান-ধৃত প্রচল গানের পাঠও পৃথক্। তবে কোনো পাগুলিপিতেই 'দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা' গানে অধিক পাঠভেদ ঘটে নাই, বিশেষতঃ গীতবিতানে ও প্রবাসী'-পাগুলিপিতে পার্থক্য আসলে নাই।

- ৩ রবীক্স-পাণ্ড্লিপি ২৭। শাস্তিনিকেতন-রবীক্সদন। ইতঃপূর্বে দেখানো হইয়াছে, ইহাই পূর্বাপর সকল বৈকালীর সমূদ্য রচনার বিশেষ আধার-পাণ্ড্লিপি।
- ৪ নটার পূজা'র প্রাদিক রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপি। অভিজ্ঞানসংখ্যা ৪৩ ও ২৫৫ক-২৫৫খ। শাস্তিনিকেতন-রবীন্দ্রদদন। ২৫৫ক সংক্ষিপ্ত অফুষ্ঠানপত্র বা বিষয়বিবরণ বলা ষায়। অক্ত ছই পাণ্ড্লিপি অসম্পূর্ণ। প্রথম পাণ্ড্লিপিতে বর্তমান সংকলনের ৩০ ও ৩৬ / বিতীয়ে ৩০, ৩৩ ও ৪৪ / তৃতীয়ে ৩০, ৩৪, ৩৬ ও ৪৪ এই সংখ্যায় নিশিষ্ট গানগুলি দেখা যায়।
- নটার পূজা। রবীক্র-পাগুলিপি, প্রায় সম্পূর্ণ। নাটকের স্কচনা হইতে রবীক্রনাথের হাতে পত্রাক্ক (পৃষ্ঠাক্ষ নয়) ৩৪ অবধি; তন্মধ্যে '১৮' '১৯' ও '২৫' অক্কিত পাতা (পৃষ্ঠা নয়) যদি থাকিয়া থাকে, ইহাতে নাই। মৃদ্রণার্থ ব্যবহৃত হইয়াছিল। বিষয়্প্রচনার পূর্বে অক্স-রচনা-রিক্ত একথানি পাতায় দেখা যায়─ শান্তিনিকেতনে '২৫শে বৈশাখ ১৩৩৩' তারিথে কবি ইহা 'পরম কল্যাণীয়া শ্রীমতী গৌরী'কে দেন, 'নটরাজ নৃত্য করে নব নব স্ক্রনরের নাটে' এই স্পরিচিত মাঙ্গলিক কবিতায়। শান্তিনিকেতনে শ্রীমতী গৌরী দেবী ও শ্রীসন্তোবকুমার ভঞ্জের সংগ্রহ। ইহাতে বর্তমান সংকলনের ৩০, ৩৩, ৩৪, ৩৬ ও৪৪ সংখ্যায় নির্দিষ্ট গানগুলি দেখা যায়।
- ৬ 'প্রবাদী'-পাণ্ড্লিপি। শান্তিনিকেতন রবীক্রদদনে শ্রীমতী শান্তা নাগ -কর্তৃক উপস্তত। ইহাকে পূর্ব-বৈকালী বলা হইয়াছে। বর্তমান সংকলনের ১ হইতে ৪০ অবধি সংখ্যায় নির্দিষ্ট, জাহা ছাড়া ৪৪-সংখ্যক গানের আধার-পাণ্ড্লিপি। '৪০' সংখ্যার শেষ স্তবকটি এই পাণ্ড্লিপিতে নাই— পূর্বমূদ্রিত (অগ্রহায়ণ ১৩১৩) ও

প্রচারিত (পৌষ ১৩৫৮) বৈকালী হইতে এই সংকলনে গৃহীত; পূর্বমৃত্তিত ও প্রচারিত গ্রন্থে অক্ত তবকগুলি যে পাতার ছিল তাহা পাওরা বার নাই। দশম পাদটীকার প্রথম অস্থচ্ছেদ দ্রন্থা।

- শহলানবিশ-সংগ্রহ। কলিকাতা। শ্রীপ্রশাস্তচন্দ্র মহলানবিশ ও শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশ গৃষ্ঠীয় ১৯২৬ সনে কবির য়ুরোপ-শ্রমণের সন্ধী ছিলেন।^{২৭} বে গীতিকবিতাবলীর স্বতন্ত্র পাণ্ডলিপি ইহাদের সংগ্রহে আছে, বেগুলির আলোকচিত্র দেখিবার ও বর্তমান সংকলনে প্রয়োজনমত ব্যবহার করিবার স্ক্রোগ পাওয়া গিয়াছে, সেগুলির সংখ্যা: ৪৫-৪৭ ও ৫৯-৬৮, তাহা ছাড়া ৬৫-সংখ্যক গানের পূর্বপাঠ বা পূর্বাভাস।
- ৮ বন্ধীয় সাহিত্যপরিষদ্ -সংগ্রহ। কলিকাতা। বিভিন্ন সময়ে বে গানগুলি ছাপা হয় সবৃদ্ধ পত্রে, তাহারই সংগ্রহ। তন্মধ্যে ষেগুলির আলোকচিত্র দেখিবার স্থাোগ হইয়াছে, বর্তমান সংকলনে তাহাদের সংখ্যা: ১ এবং ৫৩-৫৫, ৫৭-৫৮।
- ন রবীক্রপাণ্ডলিপি ১২৭। শাস্তিনিকেতন-রবীক্রদদন। ইহা মহুয়া কাব্যের অক্সতম আধার-পাণ্ডলিপি। সম্ভবতঃ মহুয়ার অক্সীভূত করার উদ্দেশে বর্তমান সংকলনের এই গীতিকবিতাবলি ইহাতে লেখা হয় বা কম-বেশি রূপাস্তরিত হয়: সংখ্যা ৫, ২৬, ৭-১০, ২৯, ৪৩, ৪৬, ৪৭ ও ৬৪। তয়াধ্যে কেবল ৪টি কার্যতঃ মহুয়া কাব্যে গৃহীত—

ৰৰ্ভমান সংকলনে

ভোরের পাথী নবীন আঁথি / চপল তব নবীন আঁথি (৫)

অজানা জীবন বাহিমু / জানি, তোমার অজানা নাহি গো (৮)

বিবশ দিন, বিরস কাজ / বিরস দিন, বিরল কাজ (২৬)

আজি এ নিরাল। কুঞ্চে, আমার / আজি এই মম সকল ব্যাকুল (৪৩)

এবং প্রচল গীত -রূপে এই পাঞ্লিপিরই আর-একটি, গীতবিভানে—

আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেখায় লেখায় (২৯)

—ইহার পরবর্তী বিভিন্ন ছত্ত্রে পাঠভেদ প্রচুর।

২৭ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের হাতের লেখায় ৩টি গান ষেমন আছে আধারপাণ্ডলিপিতে (বর্তমান সংকলনে সংখ্যা ৪৫-৪৭) তেমনি আর-কতকগুলি গানের
নকল তিনি করেন রচনাকালেই স্বতন্ত্রভাবে (সংখ্যা ৪৫-৫৮); তন্মধ্যে শেষ
৪টি ব্যতীত প্রত্যেকটি কবি-কর্তৃক স্বাক্ষরিত— কেবল লক্ষ্য করিবার বিষয় এই
যে, শেষ রচনায় 'বেলা কথন্ যায় গো বয়ে দ্লতানে ॥' এই শেষ কলি ও
রচনার স্থান-কাল কবির স্বহন্তে লেখা।

পাঠভেদ

রবীক্ররচনায়, গানে কবিতায়, পাঠভেদের অস্ত নাই বলিলে বিশেষ অত্যুক্তি হয় না। তাহার পঞ্জীকরণের শুভস্ফচনা হইয়া থাকিলেও, সর্ব গুরে 'সামগ্রিক' অথবা সর্বাদ্ধীণ পাঠপঞ্জীপ্রণয়নের সময় স্থবোগ অথবা সম্ভাবনা এখন নাই। ১৩৭৪ বৈশাথে সাগ্যাহিক দেশ পত্রের 'সাহিত্যসংখ্যা'য় উত্তর-বৈকালীর সহজ্জভা পুনংপ্রচার উপলক্ষ্যে বৈকালী লইয়া পর্যালোচনা করিয়াছেন শ্রীপুলিনবিহারী সেন; শ্রীক্তভেন্দুশেথর মুখোপাধ্যায়ের সহযোগে তিনি উত্তর ও পূর্ব উভয় বৈকালীর বহু পাঠভেদের দৃষ্টাস্কও দিয়াছেন। এ কাজে প্রচুর যম্ব পরিশ্রম অভিনিবেশ ও অভিজ্ঞতা যেমন প্রয়োজন, এজন্ম বহুবিধ উপকরণেরও একত্র সমাহার হওয়া চাই। পূর্বোক্ত দেশ পত্রে (পৃ ৫৭) তাহার তালিকা এরপ—

- ১ বিভিন্ন পাণ্ডুলিপি
- ২ প্রাসন্ধিক সাময়িক পত্র
- ৩ গীতসংগ্রহের বিভিন্ন সংস্করণ
- ৪ স্বরলিপি-সংকলনের বিভিন্ন সংস্করণ
- বিভিন্ন নাটক— নাটকের বিভিন্ন সংস্করণ বাহাতে বৈকালীর গানের ব্যবহার
- ৬ এতংসম্পর্কিত নাট্যাভিনয়ের অভিনয়পত্রী
- ৭ বিভিন্ন উৎসবামুষ্ঠানে মৃদ্রিত গীতস্থচী বা গান
- ৮ প্রাসঙ্গিক বিভিন্ন গ্রন্থের প্রেস-কপি, কবি-কর্তৃক সংশোধিত নির্দেশাদি
- » গীতশিক্ষার্থীদের সংগৃহীত রবীন্দ্রনাথের হাতে লেখা কাগজ বা 'কার্ড্'। অতংপর শ্রীপুলিনবিহারী সেন সত্যই বলেন, সম্ভবতং এ তালিকা আরও বাড়ানো ষায়।^{২৮}

যাহা হউক, বৈকালী সম্পর্কে যাঁহার। সেরপভাবে পর্যালোচনা করিতে প্রস্তুত ও আগ্রহী, দেশ পত্রে ওই আলোচনা ও প্রাথমিক পাঠপঞ্জী তাঁহাদের অবশ্র-দ্রষ্টব্য। বর্তমান গ্রন্থে বিস্তারিত পাঠভেদ- সংকলনের অবকাশ নাই, কেবল দৃষ্টাস্ত-স্বরূপ বৈকালীর কয়েকটি গান-কবিতা সম্পর্কে বিশেষ আলোচনা করা হইল।—

পাঠবৈচিত্র্য : নিদর্শন

বলা আবশ্রক ষে, বর্তমান সংকলনে ৪০ ও ৪১ সংখ্যা দিয়া নির্দিষ্ট ছুইটি কেবল কবিতা; পরে (ভাজ ১৩৩৯) পরিশেষ কাব্যে অভীপ্সিত পরিবর্তনে ও শিরোনাম-যোগে গৃহীত—

> আশ্রমবালিকা: আশ্রমের ছে বালিকা দিনাবসান: বাঁশি যথন থামবে ঘরে

পরিবর্তন সম্পর্কে ৯ ও ১০ -সংখ্যক পাদটীকায় বলা হইয়াছে। বিতীয়টির সাময়িক প্রচার (বছবার) সম্পর্কে জানা ঘাইবে বিতীয় স্ফীপত্তের একোনশেষ উল্লেখে।

2

হুইটি সংকলন মূলত: কবিতা হুইলেও গানে পরিণতি লাভ করে; তন্মধ্যে একটির (বর্তমান সংকলনে পঞ্চম: চপল তব নবীন আঁথি ছুটি) প্রথম তবকে ভাষার কোনো পরিবর্তন না করিয়াই স্থর দেওয়া হয় কিন্তু অপরটি হুইতে বিচিত্রভাবে ছুইটি গানের (অধিকন্ত একটি স্বাক্ষর-কবিতার) উদ্ভব হয় কিভাবে, তাহা কৌতূহলজনক। গান-তুইটি প্রচল পীতবিতান হুইতে উদধুত করা যাইতেছে।—

বর্তমান সংকলনে ৩৯ সংখ্যায় নির্দিষ্ট পরবাসী চলে এসো ঘরে

গান ১:

পরবাসী, চলে এসো ঘরে	2
অমূক্ল সমীরণভরে।	ર
ওই দেখে৷ কতবার হল থেয়া-পারাপার	٩
সারিগান উঠিল অম্বরে॥	8
আকাশে আকাশে আয়োজন,	e
বাতাদে বাতাদে আমন্ত্রণ।	•
মন যে দিল না সাড়া, তাই তুমি গৃহছাড়া	٩
নির্বাসিত বাহিরে অন্তরে ॥	ь

কবিতার ছত্র ১ ও ২, গানেও সেইরপ। কবিতার তৃতীয় স্তবকের শেষ ৩ ছত্র, গানে ছত্র ৩-৪ রূপে সান্ধানো হইয়াছে। কবিতার দ্বিতীয় স্তবকের ছত্র ১-২, গানে ছত্র ৫-৬। কবিতার চতুর্থ স্তবকের ছত্র ৩-৪, গানে ছত্র ৭ এবং ওই স্তবকের শেষ ছত্ত্রে 'পরবাসী' ষথন 'নির্বাসিত' রূপ ধরিল সেটি এই গানের শেষ ছত্র।

গান ২ :

এসো এসো প্রাণের উৎসবে,	>
एकिनवाद्य त्वप्तरव,	ર
পাথির প্রভাতী গানে এসো এসো পুণ্যস্নানে	৩
আলোকের অমৃতনিক'রে॥	8
এদো এদো তুমি উদাসীন।	¢
এসে। এসে। তুমি দিশাহীন।	৬
প্রিয়েরে বরিতে হবে, বরমাল্য আনো তবে—	٩
দক্ষিণা দক্ষিণ তব করে॥	ь
ত্ব:খ আছে অপেকিয়া দ্বারে—	ء
বীর, তুমি বক্ষে লহে। তারে।	٥ ډ
পণের কণ্টক দলি এসো চলি, এসো চলি	>>
ঝটিকার মেঘমন্দ্র স্বরে।	\$2

কবিতার সপ্তম অন্তম ও নবম ওবকই যথাক্রমে এই গানে প্রথম দিতীয় ও তৃতীয় গুবক। গানের প্রথম ছত্ত্রে প্রোণের', কবিতায় অন্তর্মপ স্থলে: মাটির / গানের পঞ্চম ও ষষ্ঠ উভয় ছত্ত্রের স্থচনাতেই 'এসো' কিন্তু কবিতায়: ফিরে / গানের দশম ছত্ত্রে 'বক্ষেলহো' হইলেও কবিতায় অন্তর্মপ স্থলে: বরি' লহো /

এই কবিতার আধারে রবীন্দ্রনাথ একটি স্বাক্ষর-কবিতা লিখিয়া দেন শ্রীশ্রীপতি বস্থকে; উত্তরকালে আনন্দবাজার পত্রিকায় (রবিবার। ২৪ বৈশাথ ১৩৬৮) ও ১৩৭১ সনের '২৫ বৈশাথ' উৎসবপত্রে (বিশ্বভারতী) ইহার লিপিচিত্র প্রকাশিত:

স্বাক্ষর-কবিতা

কোপা যাবে সে কি জানা নেই ?
বেপা আছ ঘর সেথানেই ।
মন যে দিল না সাড়া,
তাই তুমি গৃহছাড়া,
পরবাসী বাহিরে অস্তরে ।
আঙিনার আঁকা আলিগনা
আঁথি তব চেয়ে দেখিল না ।
মিলন ঘরের বাতি
জলে অমলিন ভাতি
সারারাতি জানালার পরে ।

এসো এসো উদাসীন	>>
এদো এদো দিশাহীন	>>
পরবাসী চলে এসো ঘরে।	20

২৫ বৈশাথ। ১৩৩৮

মূল কবিতার চতুর্থ-পঞ্চম শুবক লইয়। ইহার ছত্র ১-১০। তন্মধ্যে নবম ছত্তের 'অমলিন', মূলত: ছিল: অনিমেন / পূর্ব কবিতার অষ্টম শুবকের প্রথম-দিতীয় ছত্র হইতে এ কবিতার ছত্র ১১-১২; পরিবর্তন হয় পুরোগামী গানের পঞ্চম ও ষষ্ঠ ছত্তের ধাঁচে, অধিকম্ভ 'তুমি' বজিত হইয়াছে। মূল কবিতার প্রথম ছত্তই স্বাক্তর-কবিতার শেষ ছত্ত।

•

বৈকালীর কয়েকটি গান আশীর্বাদজ্ঞাপক কবিত। রূপে ব্যক্তিগত সংগ্রহে আছে বা দাময়িক পত্রেও প্রকাশিত হইয়াছে। গান হইতে কবিতায় অথবা কবিতা হইতে গানে রূপান্তর, ইহাতে দময়ের বিশেষ ব্যবধান না'ও থাকিতে পারে অথবা দব কয়টি কবিমানসে মূলতই গান এরূপ হইতে পারে। তুলনীয় বর্তমান সংকলনে—

তৃতীয়: নববধু

বসস্থের দৃতী তুমি, ফাল্পনের কুস্থম-উৎসবে
আনন্দের দান তব পরিপূর্ণ করি দিবে কবে ?
বকুলবীথিকাতলে
তিহরিবে লীলাচ্ছলে,
আকুল কুস্তলগন্ধে বনচ্ছায়া রোমাঞ্চিত হবে।
তৃণহিল্লোলিত পথে মঞ্জীরের কল্লোলগুঞ্জন
কণে কণে ভেঙে দিবে নিকুঞ্জের নিভৃত স্থপন।
আকাশে তোমার আঁথি
কৈ ভূলায়ে লবে ডাকি,

ধেয়ানে দেখিতে পাবে দিকে দিকে হৃদয়বল্পভে।

২:শে ফান্ধন। ১৩৩২ —ভারতী, চৈত্র ১৩৩২, পৃ ৪৬৭ আগরতলা হইতে প্রচারিত তৈমাসিক রবি পত্রে (চৈত্র ১৩৩২, পৃ ৩৮০) 'গান' শিরোনামে ও বিচিত্র পাঠান্তরে ইহারই প্রকাশ: ছত্র ২, 'দান তব' স্থলে: স্থাপাত্র / ছত্র ৩-৪, শেষ পদটি না ধরিলে: বঞ্জুলনিকুঞ্জতলে / সঞ্চরিবে / ছত্র ৩: চঞ্চল মঞ্জীরঘাতে ম্থর কলোলগুল্পরণ / ছত্র ৭, 'দিবে নিকুঞ্জের' স্থলে: দেবে অরণ্যের / ছত্র ৮-৯: নর্মন-পল্লবে হাসি / হিল্লোলি উঠিবে ভাসি / রচনাকালের নির্দেশ: ১৮ই ফান্ধন ১৩৩২।

বিতীয়:

কল্যাণীয়া শ্রীমতী রেবাকে

শ্বাশীর্কাদ ফাগুনের নবীন আনন্দে বাণী মোর গাঁথিলাম ছন্দে। পথ হতে নিক্ তুলি পাথীর কাকলীগুলি, ভরা হোক্ বকুলের গদ্ধে॥ চলে যাক্ মিলনের পাছ দখিনের বাতাদে অশাস্ত। তারি হাতে হোক্ লেখা পলাশের রাঙা রেখা হভাগিনী, তোমার দীমস্তে।

১৫ [১১।১२ ?] काजुन । ১८७२

শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

জানুরপ আশীর্বচন, স্বাক্ষর ও রচনার তারিথ -সহ ইহার অপর যে পাঠ, তাহাতে বৈকালীর ও গীতবিতানের পাঠের সহিত সাদৃশ্য অধিক। যাহা হউক, উল্লিখিত পাঠের তুলনায় ছত্র ২, 'বাণী মোর' স্থলে: গানথানি / ছত্র ৩: দিলো তারে বনবীথি / ছত্র ৪, 'গুলি' স্থলে: গীতি / ছত্র ৫, 'হোকৃ' স্থলে: হোলো / ছত্র ৬-১০, বর্তমান গ্রন্থের দ্বিতীয় স্তবকের ছত্র ১-৫ -সদৃশ। 'আশীর্বাদ' কবিতার এই দ্বিতীয় পাঠে ধুয়াটির (সব পাঠেরই প্রথম ছত্র) পুনরাবৃত্তি তুইবার; অমুরূপ তুই স্থলে বর্তমান গ্রন্থে শুধু: মধুর বসন্তে॥

প্রথম :

বাব্লিকে

ফুট্ল রসের দোলন চাঁপা / হৃদয়আকাশে।
দোল ফাগুনের চাঁদের মতন / স্থায় মাথা সে॥ ইত্যাদি
ইহার দ্বিতীয় পাঠের শিয়রে আছে : আশীর্কাদ / বাব্ লিকে / (শ্রীমতী রেব। সরকার।)

প্রথম ছত্ত্রে 'ফুটল রদের' স্থলে: দোলে প্রেমের (বর্তমান গ্রন্থে অফুরূপ) / দিতীয় ছত্ত্রে 'মতন' স্থলে: আলোয় (বর্তমান গ্রন্থে: আলোর)— ইহা ছাড়া পাঠভেদ নাই। গ্রন্থের পাঠ গীতবিতানের সদৃশ, প্রথম পদের পুনঃপুনঃ আর্ত্তি 'গায়কি'র অন্ধ। ২৯

২৯ সংকলনের প্রথম ও বিভীয় গানের তুলনা ব্যাপারে, পুরোগামী পাতুলিপির ভালিকায় ও বিবরণে শ্রষ্টব্য, সংখ্যা-২।

কোনো কোনো গানের প্রথম ছত্তেই চমৎকারজনক পাঠভেদ ঘটিয়াছে উত্তরকালে। যেমন বর্তমান সংকলনের

- থ্রামার মৃক্তি গানের স্থরে' পরে হয়: আমার মৃক্তি আলোয় আলোয় /
 গীতবিতান প্রইবা। ইহার পরের অংশেও অনেক পরিবর্তন আছে।
- (ভালো লাগার শেষ যে না পাই' পরে হয়: মধুর, ভোমার শেষ যে না পাই / অক্সান্ত ছত্তে পাঠভেদ নাই।
- ৬৫) বৈকালী-ধৃত 'তব অমূর্ত্ত বাণী

অঙ্গে আমার চিত্তে আমার / মূর্ত্তি পেয়েছে জানি।

গীতবিতানে: অরূপ তোমার বাণী

অংশ আমার চিত্তে আমার / মৃত্তি দিক সে আনি।
পরের ত্ইটি ছত্তে বংসামান্ত আরও পাঠভেদ আছে, পাঠক তুলনা করিয়া
দেখিতে পারিবেন। ব্যালাটন ফ্যুরেডের আরোগ্যভবন হইতে মৃত্তিলাভের
পূর্বেই ইহার যে পূর্বাভাস কবি-মানসে ও লেখনীতে আসে সেটি এখানে
সংকলন করা গেল (প্রথম ছত্তের শস্বগত সাদৃশ্য প্রথম ও শেষ পাঠে)—

अग्मर् अस्प्रमी अग्मर् धरात क्ष विद्याल यहे एव त्या का का । विक्र भीका निका, अग्म अर्थ प्रकार प्रमा ब्रम् कार्श विका विक्रमेशिय अरस्पक एपेण् अभ्मर् शिक्षणान ॥

>957 ೨૦ નહકુના ચહોત્ર્વ ইতঃপূর্বে বৈকালী-সম্পর্কিত রবীক্স-পাণ্ড্লিপির তালিকায় রবীক্সদদনের ১২৭-সংখ্যক রবীক্স-পাণ্ড্লিপির বিবরণে বলা হইয়াছে, ১৯৯৫ সনে মহয়া কাব্যে (আখিন ১৯৫৬) সংকলনের উদ্দেশে যথাপূর্ব রূপে অথবা বিচিত্র রূপান্তরে কোন্ কোন্ রচনা কবি উহাতে লিপিব্দ্ধ করেম। কার্যতঃ সবগুলি মহয়ায় গ্রহণ করা হয় নাই; বেগুলিতে পরিবর্তন করা হইয়াছে, পরিবর্তনের প্রকৃতি ও পরিমাণ একরপ নহে। মুদ্রিত কাব্যগ্রন্থে, যুগপং বৈকালীতে ও মহয়ায়, বেগুলি আছে, সেগুলির পারস্পরিক তুলনা পাঠক নিজেই করিতে পারিবেন; অহ্য কতকগুলি রচনার রূপান্তরবৈচিত্র্য এ হলে অমুধাবনের বোগ্য। তি রবীক্স-পাণ্ড্লিপি ১২৭ - আধারিত বর্তমান সংকলনের—

30

আমার লতার প্রথম মুকুল:

আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী

চেয়ে আছে মোর পানে,
ভথায় আমারে, "এসেছি এ কোন্থানে?"
এসেছ আমার জীবনলীলার রঙ্গে,
এসেছ আমার তরল ভাবের ভঙ্গে,
এসেছ আমার স্বরতরঙ্গানে
জাগাতে সে কথা যাহা কেহ নাহি জানে ॥
আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী
প্রভাতআলোকমাঝে
ভথায় আমারে, "এসেছি এ কোন্ কাজে?"
এসেছ টুটতে কাজের জটিল গ্রন্থি,
বিরস চিস্তে অমৃত তুলিতে মন্থি',
বাজাতে বাঁশরী প্রেমাত্র হুনয়ানে,
মিলাতে তোমারে আমার আয়্লানে॥

৩০ ১২৭-সংখ্যক রবীন্দ্র-পাণ্ড্লিপির বিবরণে বর্তমান বৈকালীর ৫, ৭, ৮, ৯, ১০, ২৬, ২৯, ৪৩, ৪৬, ৪৭ ও ৬৪ সংখ্যার নির্দেশ। তন্মধ্যে ৫, ৮, ২৬ ও ৪৩ মহন্না কাব্যে গৃহীত আর ৭ ও ৯ অন্ধ-যুক্ত রচনান্ন কোনো পরিবর্তন হয় নাই। স্বতন্ত্র আলোচনার বিষয়— '১০', '৪৬', '৪৭', '৬৪' ও বিশেষভাবে '২৯'। এটা ভূমিকার [মন্ত্রা'র] খেতে পারে / কবি-কর্তৃক এই মন্তব্য লেখার পরেও আছম্ভ রচনা বর্জনচিহ্নে লাঞ্চিত। রূপান্তর: ২৫ শ্রাবণ ১৩০৫

86

কার চোথের চাওয়ার:

চোথের চাওয়ার হাওয়ার দোলায় মন !
তাই কি হৃদয় বিকল সকল থন ?
তাই হাসি তোর অশ্রেধারায় ধোওয়া,
ভাবনা কি তাই মৌনছায়ায় ছোঁওয়া ?
ভাষায় কি তাই রাগিণীর আবরণ ?
কেমন বিকল আছিস সকল থন !

পরশমণির পরশে পরাণ জাগা, তাই তো তোমার স্বপ্ন সোনায় লাগ।। দিনের প্রবাহে প্রহরলহরীতলে ঝিলিমিলি করি স্বর্ণঝলক ঝলে

> কালোয় আলোয় কাঁপায় আথির কোণ, কেমন বিকল আছিদ সকল থন॥

ছন্দের প্রকৃতিগত পরিবর্তন লক্ষণীয়। নৃতন ছন্দে মাত্রাপ্রণের জক্তও বছ পরিবর্তন। পাঙুলিপি-পর্যালোচনায় ধারণা হয় যে, রচনা : ২৭—২৮ শ্রাবণ ১৩৩৫। অর্থাৎ, ২৭ বা ২৮ যে কোনো তারিখে।

89

রয় যে কাঙাল শৃন্ম হাতে:

নিংস্ব যে রয় শৃশ্ব পাত্রে
দিনের শেষে
সেই দেখা দেয় নিলীপ রাত্রে
রাজার বেশে।
দিবসে মান সে রাজপথে তারে
মৌন দেখি,
তিষিরস্থাসনে চক্ত্তে তার
দীপ্তি একি!
পুস্পম্কুট কে পরায়ে দেয়
তাহার কেশে।

দিনে তার কাজে স্থর ছিল না বে
তাই তো হেলা,
বিজয়মন্ত্র বাজায় তন্ত্রী
রাতের বেলা।
তন্ত্রাবিহীন অন্ধকারের
বিপুল গানে
মন্ত্রিয়া উঠে গৌরববাণী
তাহার প্রাণে,
তারার আলোয় কে তাহারে ছোঁয়
বক্ষে এসে ॥

[२१८-२४ स्मित्न १७७६]

ছন্দোভেদ ইহাতেও লক্ষ্য করিতে হইবে; অনেক পাঠভেদের কারণ তাহাই। পাণ্ডুলিপিতে, পূর্ব সংকলিত রচনার অব্যবহিত পরে ইহার স্থান। ছ্টিতেই উন্তর-বৈকালী -খৃত মূল রচনার স্থান-কাল দেওয়া থাকিলেও, পরিবর্তনের কাল ২৭—২৮ শ্রাবণ ইহাতে সন্দেহ নাই।

পরবর্তী সংকলন বিধাভিন্ন; আলোচ্য পাণ্ড্লিপিতে প্রথমটি লাঞ্চিত এবং বিতীয়টি 'গ্রাছ' পাঠ— কেননা, বর্জনচিহ্ন নাই।

હે8

পাছ পাথীর রিক্ত কুলায়:

পাস্থ পাথীর রিক্ত কুলায়
কান পেতে রয় ডালে
পলাতকার পথের পানে
পাতার অস্তরালে।
বাসায় ফেরা ডানার শব্দ
নিঃশেষে সব হল শুরু,
সন্ধ্যাতারার মন্ত্র উঠে

দিনের বিদায়কালে। ইত্যাদি

ছিতীয় গুবকে পরিবর্তন নাই, কোনো গুবকেই 'ধুয়া' লেখা হয় নাই, শেষ ছত্র : বেণুশাখার তালে ॥ / পরিবর্তিত পাঠের রচনা মনে হয় : ২৬—২৭ অগস্ট্১৯২৮ বা ১০—১১ ভাদ্র ১৯৩৫ । স্বটা বর্জনচিহ্নিত ।

গ্রাহ্ম পাঠ

পাছ পাষীর রিক্ত কুলায় আমি
কান পেতে রই ভালে।

সকালবেলায় নিল সে বিদায় সাগরতীর্থগামী
গিরির অস্তরালে।

ঘর-ফেরা যত ভানার শব্দ গুণি,
শেষ হয়ে যায়, আর কিছু নাহি শুনি;

সন্ধ্যাতারার মন্ত্রজপের সময় ঘনায়ে এল
দিনের বিদায়কালে॥

চক্রমা দিল রোমাঞ্চে চঞ্চলি'
তরঙ্গ সিন্ধুর।

বনচ্ছায়ার রদ্ধে রদ্ধে মাণিক্য পড়ে গলি'
জ্যোৎস্নার বিন্দুর।

স্থাধিবিহীন অসীম শৃহতা যে
সকল প্রহর হুহুক্কারিয়া বাজে
বক্ষে আমার; বৈরাগী এই রাতের হাওয়ার স্থুরে

লক্ষণীয় এই ষে, ছন্দোভেদ ঘটিয়াছে, কতকগুলি ছত্তে মাত্রাসংখ্যা বাড়াইয়া শুবকের ছাঁদও বদল করা হইয়াছে। এই পরিবর্তিত রচনার কাল ২৭ অগস্ট্ বা ১১ ভাদ্রের পরে কিন্তু ৭ কার্তিক ১৩৩৪ তারিথের পূর্বে। অর্থাৎ, ১১ ভাদ্র—৭ কার্তিক ১৩৩৪। এই গীতিকবিতার সর্বশেষ পদ, এ সম্পর্কে ২৬-সংখ্যক পাদটীকা বিশেষ দ্রষ্টবা।

পল্লবকলতালে ॥

পরবর্তী আলোচনা যে কবিতা বা গান লইয়া, তাহার উদ্ভবের ও ক্রমপরিণতির ইতিহাস বিচিত্র। দ্বিতীয়, বিশেষতঃ তৃতীয় হুচীপত্রে (পু 19 ও 143 / পারম্পর্যে ১০ ও ৪৭), যেমন ইহার উল্লেখ, তেমনি ত্রয়োদশ ও ত্রয়োবিংশ টীকায় ইহার বিষয় বলা হইয়াছে। ২৭-সংখ্যক রবীক্রপাণুলিপির '19' পৃষ্ঠার পাঠ উদ্ধার করা যায় নাই তবে এটুকুই অন্থমান করা চলে যে, এই পাঠ 'প্রবাদী'-পাণুলিপির অন্থরপ (বর্তমান গ্রন্থে '২৯' সংখ্যায় সেই পাঠই দেখা যায়), পক্ষাস্তবে ইহার বীজরপ কী ছিল এবং পরে পরে কী পরিবর্তন হইল স্ক্রপ্তাই রবীক্রলেখায়নে বিশ্বত। যথা—

ক) স্বাক্র-কবিতায় পূর্বাভাস

महाराह मीयर क्राया भारताहर क्राया मीयर क्राया में क्राया मीयर क्राया भारताहर क्राया में मेर्याचे सीयर मायर भारताहर क्राया मेर्याच

८००१ १५११म् च्याप्यास्त्रे

₹)

—শ্রীমতী লীলা মজুমদারের স্বাক্ষরসংগ্রহ

- খ) রবীন্দ্র-পাণ্ডুলিপি ২৭, পৃ 19-ধৃত রূপ। পাঠোদ্ধার হয় নাই। রচনা ১২ চৈত্র ১৩৩২ তারিথের আগে অথবা ওই দিবসে।
- গ) 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপি তথা বর্তমান গ্রন্থ -ধৃত রূপ। ২৯ বৈশাথ ১৩৩৩ তারিথে বা অব্যবহিত পূর্বে প্রবাসী-সম্পাদকের উদ্দেশে প্রেরিত। এই পাঠ পূর্বোক্ত প্রচ্ছন্ন বা অবলুগু পাঠের প্রতিরূপ না হইলেও অন্তরূপ হইতে পারে।

পরিবর্তিত রূপ

अभवारक काउंतर अभवार- येद्धाव के के नीनां, आसरे सीना अग्राच पातक प्रमां क्रिक्षं, अप्राच नीना अग्राच पातक प्रमां क्रिक्षं, अप्राच नीना अप्राच के विकार

भेषुंड जायर पर दीय मक्सर जासाई॥ में प्रतं था पं भवर जायर प्राप्त क्ष्यं भेष्ट जायर सारोंड में ये ने ने प्रतं क्ष्यं में क्ष्यं क्ष्यं

--রবীজ্ঞ-পাতৃলিপি ২৭, পু 143

'145' পৃষ্ঠা -ধৃত লাঞ্ছিত এবং সম্ভবতঃ বজিত / অপ্রকাশিত ইংরেজি রূপান্তরের রচনা : ১৭ জুলাই ১৯২৬ বা ১ শ্রাবণ ১৩৩০। বাংলা রচনা যে ওই দিনে বা উহার অব্যবহিত পূর্বে তাহা অমুমান করা চলে।

ঙ) প্রচল গীতরূপ

আঁধারের লীলা আকালে আলোকলেথায় লেথায় ছন্দের লীলা অচল কঠিন মৃদকে। অরপের লীলা অগোণা রূপের রেথায় রেথায়,

স্তব্ধ অতল খেলিছে তরল তরকে।

আপনারে পাওয়া আপনা-ত্যাগের গভীর লীলায়, মৃর্জির লীলা মৃর্জিবিহীন কঠোর শিলায়

শাস্ত শিবের লীলা যে প্রলয়ভ্রভঙ্গে॥ শৈলের লীলা নির্ঝরকলকলিত রোলে, শুভ্রের লীলা কত না রঙ্গে বিরঙ্গে।

মাটির লীলা যে শস্তের বায়্-হেলিত দোলে,
আকাশের লীলা উধাও ডানার বিহঙ্গে।

স্বর্গের থেলা মর্ক্তোর মান ধ্লায় হেলায়। তুঃধেরে লয়ে আনন্দ থেলে দোলন-থেলায়,

শৌর্য্যের খেলা ভীক্র মাধুরীর আসঙ্কে॥

-রবীন্দ্রপাণ্ডুলিপি ১২৭, পু 57

22

রচন। ৭—১০ ভাদ্র ১০০৫ তারিথে, কেননা এই থসড়া-পাণ্ডুলিপিতে পূর্ববর্তী রচনায় তারিথ ২০ অগস্ট্ ১৯২৮ বা ৭ ভাদ্র এবং পরবর্তী রচনার তারিথ : ২৬ অগস্ট্ ১৯২৮ বা ১০ ভাদ্র ১০০৫। মূলতঃ মহুয়া কাব্যে সংকলনের উদ্দেশে রচিত মনে হয়। গীতবিতান-ধৃত প্রচল গীতরপে একটি মাত্র পাঠপরিবর্তন চতুর্থ ছত্তে, 'খেলিছে' স্থলে : খেলায় / একাদশ ছত্ত্রে একটি পাঠপ্রমাদ-জনিত মূদ্রণপ্রমাদও সম্ভবতঃ আছে—'ডানার' স্থলে : ভাষার / তাৎপর্যের দিক দিয়া অনাহুত বা অবাঞ্চিত মনে হয়।

পাঠবৈচিত্র্যের সংকলন শেষ করা গেল। কৌতৃহলী তথা কাব্যজিজ্ঞাস্থ পাঠক বর্তমান গ্রন্থ, গীতবিতান, মছয়া, প্রাসন্ধিক অস্তান্ত নাটক / কাব্য মিলাইয়া দেখিলে আরও অনেক পাঠভেদ দেখিতে পাইবেন। নিজের লেখা নিজে নকল করিতে গিয়াও কবি পাঠ বদল করেন নাই, এ দৃষ্টাস্ত বিরল হইতে পারে। 'এই পাঠ অথবা এই ছত্র ভালো' 'এটি ভালো নয়', আশু এরপ সিদ্ধাস্তের লোভ সংবরণ করিলে হয়তো দেখা

ষাইবে— বিভিন্ন পাঠের প্রয়োগ বা প্রয়োজন বিচিত্র আর বিশেষ উপযোগিতাও অবশ্রুই রহিয়াচে।

॥ শংকলন-স্ত্র। বর্তমান শংকলনের অর্থাৎ অথগু বৈকালীর ক্রমিক অঙ্ক -অন্নুষায়ী—
১-১৯, ২১-৪০ 'প্রবাদী'-পাগুলিপি হইতে।
২০, ৪০ (শেষ-ন্তবক) - ৪৮, ৫১-৬৪ গুড়৬ পূর্বমূদ্রিত বৈকালী হইতে
যাহার মূলাধার 'এল্যুমিনিয়মের পাতে' কবির হাতের লেখা।
৬৫, ৬৭, ৬৮ ও গ্রন্থপরিচয়-ধৃত ৬৫'র পূর্বাভাস যে আদর্শ হইতে
শেগুলি রহিয়াছে মহলানবিশ-সংগ্রহে।
৪৯ ও ৫০, ব্যবহারযোগ্য অন্য রবীক্রপাগুলিপির অসম্ভাবে, ১৩১৪
বৈশাথে মাদিক বস্ক্ষতী পত্রে মুক্তিত লিপিচিত্র হইতে ঈষৎ
বর্ধিতাকারে গহীত।

দর্বশেষ তুইটি গান (৬৭ ও ৬৮) ধাতৃপত্রে লেখা উত্তর-বৈকালীতে আদৌ না থাকিলেও, স্বাধিকারে উহাতে তাহাদের স্থান ও মর্যাদা সম্পর্কে সংশয়ের অবকাশ নাই। কেননা, বৈকালী-রচনাপর্বের সহিত ওই ছটি গান অঙ্গাঙ্গীভাবে যুক্ত এবং সংগীতে বেমন সম বা শম, দর্বশেষ গানে তেমনি সমৃদায় বৈকালীর অভীষ্ট পরিণাম বা স্থসংগত সমাপ্তি।

॥ স্বীকৃতি ॥ সম্পূর্ণ 'প্রবাসী'-পাণ্ডুলিপি পাওয়া গিয়াছে ও ব্যবহারের স্ক্ষোগ হইয়াছে শ্রীমতী শাস্তা নাগের সৌজতো।

> বৈকালীর বহু গানের প্রতিচিত্রণ শ্রীমতী নির্মলকুমারী মহলানবিশের সৌজত্যে সম্ভবপর হইয়াছে।

> বছ গানের রচনাকাল জানিবার স্থযোগ দেন শ্রন্ধের অনাদিকুমার দন্ডিদার।
> 'নটার পূজা'র রবীন্দ্রপাণ্ডলিপি দেখিবার স্থযোগ দেন শ্রীসস্ভোষকুমার ভঞ্জ ও
> শ্রীমতী গৌরীদেবী।

গ্রন্থসম্পাদনায় বহু তথ্যের সন্ধান দিয়াছেন শ্রীপুলিনবিহারী সেন এবং শ্রীশোভনলাল গলেপাধ্যায়।

সম্পাদনা ও গ্রন্থপরিচয়-রচনা : একানাই সামস্ত

বর্ণামুক্রমিক সূচীপত্র

সূচনা	সংখ্যা	পৃষ্ঠা
অনস্তের বাণী তুমি	•	৩
অনেক কথা যাও ষে ব'লে	>%	74
আকাশ, তোমায় কোন্ রূপে মন	48	٧٤
আকাশে তোর তেম্নি আছে ছুটি	৬১	৭৩
আজি এই মম সকল ব্যাকুল	80	¢ 8
আঁধারের লীলা আকাশে আলোক-লেখায়	[२३]	>>5
আঁধারের লীলা আকাশে আলোক লেখায় লেখায়	[२३]	220
শাঁধারের লীলা আকাশে আলোকলেথায় লেথায়	२२	৩২
আঁধারের লীলা আলোর রঙ্গ বিরক্তে	[२३]	>> 5
আধেক ঘুমে নয়ন চুমে	२२	२৫
আপন গানের টানে, আমার	« 9	<i>৬৯</i>
আপনহারা মাতোয়ারা	8२	es
আপনারে দিয়ে রচিলি রে কি এ	७ €	৩৮
আপ্নি আমার কোন্খানে	e ৮	90
আমার প্রাণে গভীর গোপন	٥٢	୬୫
আমার প্রাণের জাগরণী দৃতী	[>•]	۶۰۶
আমার মৃক্তি গানের হুরে	65	⊌ 8
আমার লতার প্রথম মৃকুল	>•) 2
এ পথে আমি যে গেছি বার বার	২৩	২৬
এবার এল সময় রে ভোর	25	२ऽ
এসো আমার ঘরে	२৮	ره
এসো এসো প্রাণের উৎসবে	[🕫]	> 8
ওগো জলের রাণী	२•	રર
ওগো স্থলর, একদা কী জানি	69	95
কাঁদার সময় অল্প ওরে	>>	>8
কার চোথের চাওয়ার	89	eb
কী পাই নি তারি হিদাব মিলাতে	78	১৬

की कुल वित्रल विश्रल अफकादा	>	
কেন রে এতই যাবার স্ক্রা	33	>>
কোখা বাবে সে কি স্থানা নেই	[ده]	30
কোধায় ফিরিস পরম শেষের অন্বেষণে	% •	> 8
ক্ষত ষত ক্ষতি যত	৬৭	92
চপল তব নবীন আঁথি ছটি	e e	۹۶
চাহিয়া দেখো রমের স্রোতে স্রোতে	•	•
চোধের চাওয়ার হাওয়ায় দোলায় মন	9.9	৬৭
তোবের চাত্রার হাত্রার দোলার শন ছুটির বাঁশি বাজ্ল যে ঐ	[8৬]	۷۰۶
•	8 <i>৮</i>	٠.
জানি, ভোমার অজানা নাহি গো	ь	>•
তপস্বিনী হে ধরণী, ওই যে তাপের বেলা আদে	२৫	२৮
তব অমূৰ্ত্ত বাণী	৬৫	99
তুমি উষার সোনার বিন্দু	(&	৬৮
তৃমি কি এসেছ মোর দ্বারে	৩৬	৫৩
তোমার অরূপ বাণী	[৬৫]	١٠٩
তোমার বীণা আমার মনোমাঝে	8	8
তোর ভিতরে জাগিয়া কে যে	« •	৬২
দিন পরে যায় দিন	₹8	૨ ٩
দিনের বেলায় বাঁশি ভোমার	৬৩	9@
দে পড়ে দে আমায় তোরা	59	<i>و</i> ر
দোলে প্রেমের দোলন চাঁপা	>	3
নাই, নাই ভয়, হবে, হবে জয়	« >	৬৩
निनीरथ की करत्र राम मत्न	٠.	৩৩
নিঃস্ব ষে রয় শৃক্ত পাত্তে	[89]	202
নৃপুর বেজে যায় রিনিরিনি	• •	b
পথ এথনো শেষ হল না	৬২	98
পথে বেতে ডেকেছিলে মোরে	୬୫	৩৭
পরবাসী চলে এসো ঘরে	ల ৯ ′	82
পরবাসী চলে এসে৷ ঘরে	ि दथ	3.9
পাতার ভেলা ভাসাই নীরে	≯ b-	٠,٠٠
পাস্থ পাথীর রিক্ত কুলায় আমি	[%8]	>>>
	r - 1	•••

পাছণাৰীর রিক্ত কুলায় কান পেতে রয় ভালে	[68]	>>•
পাস্থপাৰীর রিক্ত কুলায় / গহন গোপন ভালে	₩8	76
कांश्रत्वत्र नदीन चानत्म / गानवानि	2	ર
का अत्वात नवीन जानत्म / वांनी स्थात	[*]	>•#
ফুটুল রদের দোলন টাপা	[>]	>••
বনে যদি ফুটল কুক্ম	29	9•
বসস্তের দৃতী তুমি	[•]	>•¢
বাঁধন-ছেঁড়ার সাধন হবে	৩৩	૯৬
বাঁশি আমি বাজাই নি কি	હહ	16
বাঁশি যথন থামবে ঘরে	8 •	8 t
বিনা সাজে সাজি দেখা দিয়েছিলে কবে	>@	>4
বিরস দিন, বিরল কাজ	২৬	२३
ভালো লাগার শেষ যে না পাই	4 8	৬৬
মরণসাগরপারে তোমরা অমর	৩৮	8 >
মাঘের বিদায় ক ণে	8 5	8.5
যা পেয়েছি প্রথম দিনে	৬৮	ь.
রয় যে কাঙাল শৃ্ন্য হাতে	8 9	63
লিখন তোমার ধ্লায় হয়েছে ধূলি	٩	>
শেষ বেলাকার শেষের গানে	٤٢	₹8
সকাল বেলার আলোয় বাজে	e o	৬৫
সে কোন্ পাগল যায় পথে তোর	8 ¢	49
সেই ভালো সেই ভালো	>€	۶۹
হার মানালে ভাঙিলে অভিমান	७२	96
হে চির-নৃতন আজি এ দিনের	৩৭	8•
হে মহাজীবন, হে মহামরণ	88	(b

বিশ্বভারতী গ্রন্থনবিভাগের পঞ্চাশংবর্ধ-পূর্তি উপলক্ষে প্রকাশ : ৩২ আষাঢ় ১৩৮১ : ১৭ জুলাই ১৯৭৪

© বিশ্বভারতী ১৯৭৪

প্রকাশক রণজিৎ রায় বিশ্বভারতী। ১০ প্রিটোরিয়া স্থাট। কলিকাতা ১৬

মৃক্রক শ্রীস্থানারায়ণ ভট্টাচার্য তাপদী প্রেস। ৩০ বিধান সরণী। কলিকাতা ৬